हिंदी विभाग, चिन्मय विद्यालय, बोकारो से प्रकाशित
(त्रैमासिक ई–पत्रिका)

जुलाई–2019, अंक–2

नई सुबह

हम बच्चों की . . .

हरियाली ही हरियाली

विशेष :–

साक्षात्कार : श्री महेश त्रिपाठी (सचिव)
चिन्मय विद्यालय, बोकारो

नई सुबह

हम बच्चों की. . .

(हिंदी विभाग, चिन्मय विद्यालय, बोकारो की त्रैमासिक ई–पत्रिका)

ॐ

चिन्मय विद्यालय, बोकारो

संपादक मंडल

शिक्षक

ज्योति दूबे
आभा सिंह
नीलिमा कुमारी

संपादन सहयोग एवं अंक–सज्जा

मंतोष कुमार
हिमांशी टंक
अंजनी कुमारी

संपादकीय विभाग

हिंदी विभाग
चिन्मय विद्यालय, बोकारो
झारखंड – 827006

ई–मेल

cvbokaro.naisubah19@gmail.com

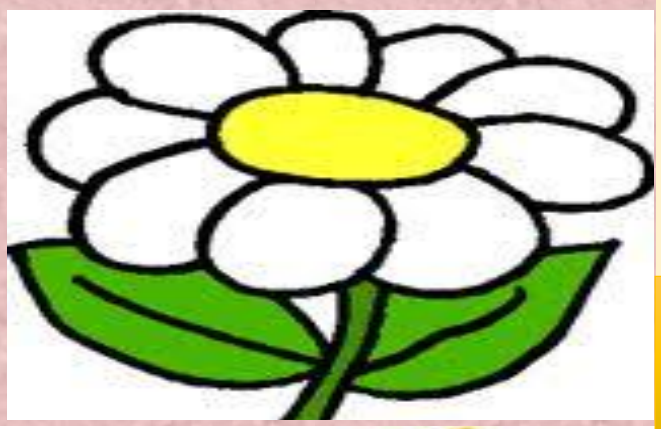

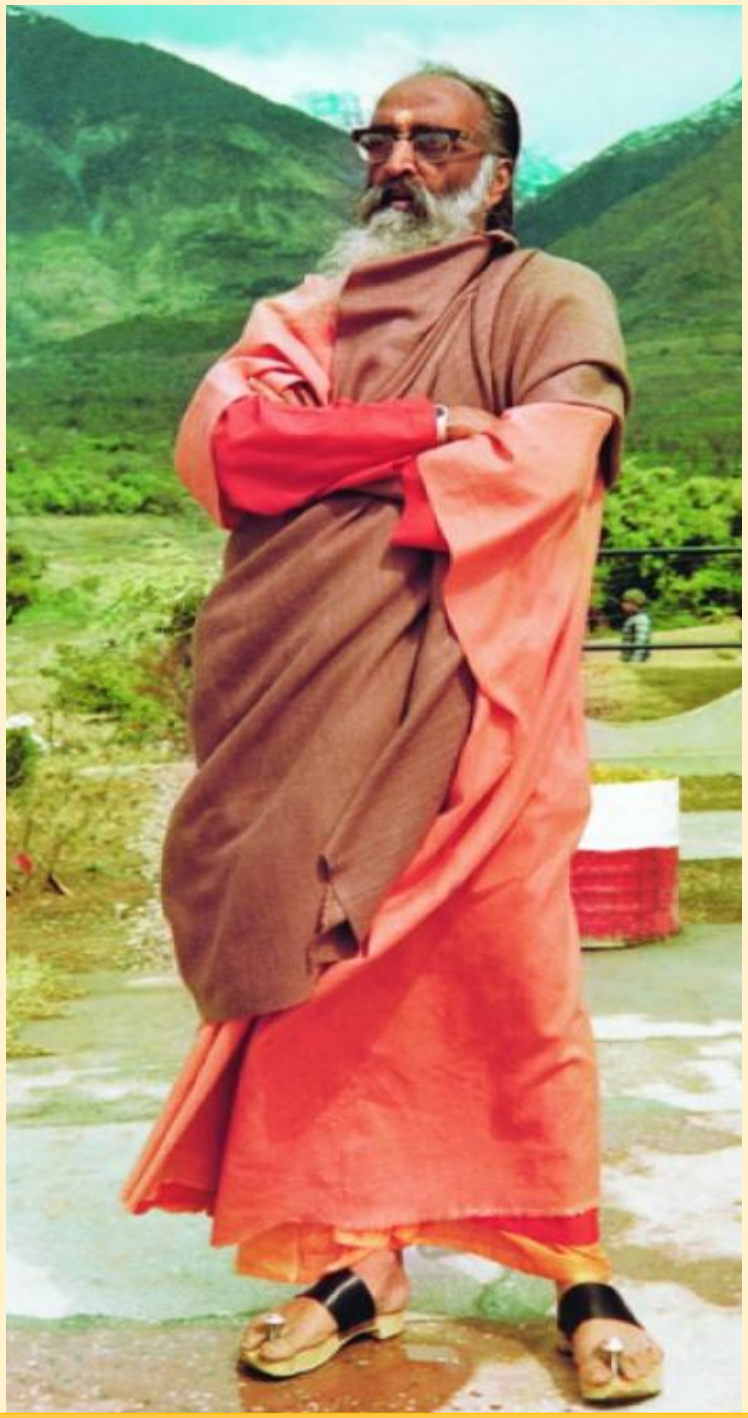

ॐ मंगलम् ॐकार मंगलम्
गुरु मंगलम् गुरुपाद मंगलम्
श्याम मंगलम् श्यामकार मंगलम्

नई सुबह

हम बच्चों की. . . .

(हिंदी विभाग, चिन्मय विद्यालय, बोकारो की त्रैमासिक ई–पत्रिका)

विषय सूची

इस अंक में

संपादकीय.....

गुरु 06

नवीन हस्ताक्षर ———

- तकलीफ़ की अहमियत — आस्था सिंह (10बी) 07
- मेरे सफ़र की कहानी – — प्राची श्रीवास्तव (7बी) 08
- सत्य का फल — राहुल कुमार (7बी) 08
- बुद्धि में बल — अश्विन कुमार (7बी) 09
- खूबसूरत माँ — श्रेया (7बी) 09
- जादुई खिड़की — ठाकुर ऋतु राज (2बी) 10
- मेरी माँ — निधि प्रिया (7बी) 10
- स्कूल का पहला दिन — आर्यन चौधरी (2बी) 11

शब्द निर्झर—— 12

चित्र देखकर कविता लिखो

साक्षात्कार —— 13

श्री महेश त्रिपाठी, सचिव, चिन्मय विद्यालय, बोकारो

विविध ——

- लघु नाटक — रॉली प्रियदर्शी 15
- कथा संसार — अधूरी कहानी 16
- चित्र वीथिका — चित्र परिचय 17
- अगला जहाँ 18
  सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का वर्चस्व
- हिंदी प्रश्नोत्तरी 19
- रेत घड़ी 20
  धर्मवीर भारती,
  महाश्वेता देवी
- अतीत के झरोखे से 21
  रामधारी सिंह दिनकर
- यात्रा–वृत्तांत 22
  राहुल सांकृत्यायन
- ज़रा हट के
  हंसी के गोलगप्पे 23
  बूझो पहेली 24
- चित्र में रंग भरो 35

नयी पौध ——

मेरी माँ — लाएबा (7डी) 25

परछाई — सुप्रीत कोर (7डी) 25

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ — निष्ठा सुमन (7डी) 26

भ्रष्टाचार — ईषिता दूबे (6डी) 26

ईश्वर की सोच — आहना (7डी) 27

बेटी — प्राची सुमन (6सी) 27

शिक्षक — प्रतीक कुमार (6एफ) 28

मेरा परिवार — निष्ठा सुमन (7डी) 28

औरत का रूप — सोना (7बी) 29

पितामह भीष्म — चित्तरंजन अरिहंत (11बी) 29

पापा — श्रेयश वत्स (7एफ) 30

परीक्षा की तैयारी — भव्या सिन्हा (6ई) 30

महानता — ऋषि राज (8डी) 31

बेईमान राजनीति — विनायक पांडे (9बी) 31

वर्षा रानी — ईशान सिन्हा (6सी) 32

उच्चता काफ़ी नहीं — रोशन प्रभाकर (11एम) 32

सफ़रनामा — कविता सिन्हा (शिक्षिका) 33

धरती माँ — तिलोत्तमा कोचगवे (शिक्षिका) 33

दिल का रिश्ता — ज्योति दूबे (शिक्षिका) 34

गुरु ध्यानम्

सच्चिदानन्दरूपाय व्यापिने परमात्मने।
नमः श्री गुरुनाथाय प्रकाशानन्दमूर्तये।।

(सत् चित् और आनंद स्वरूप व्याप्त परमात्मा,
प्रकाश और आनंद की मूर्ति श्री गुरुनाथ को नमस्कार है।)

संपादक की कलम से . . . . .

प्यारे बच्चों,

देखते–देखते मॉनसून भी आ गया। याद है आपको वो दिन जब आपको रिमझम फुहारों में भींगने का मन करता होगा, साथ ही मम्मी की डाँट का भी डर सताता होगा। कानों में एक आवाज़ हमेशा गूँजती रहती, होगी, भींगना मत, नही ंतो बीमार पड़ जाओगे। पर आपका मन तो यही करके आनंद पाएगा। दोस्तों के साथ मिलकर, कागज की वो छोटी–छोटी नावें बनाना, फिर उन्हें सड़क में कहीं जमे हुए पानी में चलाना, तो कभी नालों में तैरने के लिए उन्हें छोड़ आना . . . आपके कोमल मन में गुदगुदाहट तो भर ही देती होगी।

प्रकृति का हरेक रूप निराला है . . . इसके हरेक रस में उमंग है, तो आइए बच्चों, इस बारिश में भी कुछ ऐसा ही करते हैं, उन सभी मस्तियों को फिर से जी लेते हैं जिन्हें हमने मोबाइल एवं टी.वी. के बीच कहीं खो दिया है। बारिश के मौसम में जमकर मजा लेना, कुछ अच्छा–सा संगीत बजे और इसी बीच मम्मी किचन से गर्म–गर्म पकौड़े ले आए, तो फिर क्या बात . . . . .

प्यारे बच्चों, आप सब को मेरी तरफ से अर्द्धवार्षिक परीक्षा एवं आने वाले सभी त्योहारों की हार्दिक शुभकामनाएँ। आप जीवन में ऐसे ही प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ . . . .

गुरु

—स्वामी चिन्मयानंद

बुद्धि से सुदृढ़ व्यक्ति बहुत शांत होता है एवं उसका संतुलन उस वक्त तक नहीं टूटता है, जब तक वह अपनी पूरी ऊर्जा को विश्व मानवता की सेवा के लिए देता रहता है। एक व्यक्ति के अंतर्मन से निकले शब्दों में तभी उड़ान आ सकती है, जब वे विषयात्मक अनुभवों से भरे हृदय से प्रस्फुटित हो। गुरु के द्वारा की गई व्याख्या बुद्धि से परिपूर्ण होकर भी बुद्धि से परे है। यह तभी संभव है जब एक गुरु विभिन्न ऋषियों द्वारा उपनिषद् में समाहित शिक्षा जो कि अकथनीय है, का पालन करें।

शिक्षा का माध्यम केवल शब्दों का स्थानांतरण ही नहीं होता, बल्कि गुरु का आचार–व्यवहार, उसकी अनुभूति एवं उसका चरित्र भी एक शिष्य के जीवन में अमिट छाप छोड़ता है एवं आदर्श रूप प्राप्त करता है। इस प्रकार, विश्व में एक गुरु का व्यवहार जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्तम होना ही चाहिए। एक गुरु में विशाल सहृदयता, दया–भाव एवं धैर्य का होना नितांत आवश्यक है। इन सारे गुणों का होना आवश्यक है, क्योंकि पहले के समय में गुरु की दूरदृष्टि छात्रों के समझ से परे थी, जिस वजह से वे नवीन विचारों और अवधारणाओं का विरोध करते थे। किसी भी विचारों का अंकुरण तभी संभव है, जब एक गुरु में अनंत धैर्य, असीम प्रेम एवं परम स्नेह छात्रों के प्रति विद्यमान हो।

गुरु वही है, जिसकी उपस्थिति शिष्यों को अग्रसर होने में लगने वाली ऊर्जा का संचार सतत् रूप से करे और उसे एक महान जीवन जीने के लिए प्रेरित करे। गुरु वही है, जिसके साथ रहकर आपकी कमज़ोरी भी आपकी ताकत बन जाए। गुरु वही है, जिसे यादकर आप अपनी कठिन परिस्थितियों में भी संतुलन का भान करते हों। वास्तव में हमारे गुरु हमारे ईश्वर हैं – हमारे अंतर्मन के ईश्वर।

अतः उनका सम्मान करें एवं उनकी उपासना करें।

नवीन हस्ताक्षर

तकलीफ़ की अहमियत

– आस्था सिंह वर्ग–दशम् 'बी'

किसी ने बहुत खूब कहा है कि – ज़िंदगी मेहनत, संघर्ष और परिवर्तन का नाम है और जीवन में परिवर्तन लगातार प्रयास और मेहनत से ही होता है।
दोस्तों, किसी ने सच ही कहा है कि –
"कामयाबी के सफ़र में धूप बड़ी काम आई
छाँव अगर होती, तो कब का सो गए होते।"

इन दो पंक्तियों का अर्थ मैं आपको एक कहानी के माध्यम से समझाती हूँ . . .
एक बच्चा था, जो हर गर्मी की छुट्टियों में अपने नानाजी के घर जाता था। एक बार उसने अपने नानाजी से पूछा – "नानाजी ये महान लोग महान कैसे बनते हैं?" तो उसके नानाजी ने जवाब में कहा – "बेटा, ये बात मैं तुम्हें दो पौधों के उदाहरण से समझाऊँगा।" फिर उस बच्चे के नाना जी उसे बाज़ार लेकर जाते हैं और वे दोनों दो पौधे खरीद कर लाते हैं।

उनमें से एक को उसके नानाजी बाहर बगीचे में ज़मीन पर लगा देते हैं और दूसरे को घर के अंदर गमले में। फिर वे बच्चे से कहते हैं – "बेटा तुम्हें तुम्हारा जवाब अगली छुट्टियों में मिल जाएगा।" दिन बीते, गर्मी की छुटटियाँ फिर वापस आई। उस बच्चे ने दोबारा अपने नाना जी के घर आकर उनसे पूछा – "नानाजी उन पौधों का क्या हुआ जो हमने पिछली छुट्टियों में लगाया था ?" तो उन्होंने कहा "बेटा तुम पहले उस पौधे को देखकर आओ, जो हमने घर के अंदर लगाया था।"

बच्चा गया और उसने देखा कि पौधा बड़ा हो चुका था। उसने वापस आकर अपने नाना जी से कहा – "नानाजी वह पौधा तो अब बड़े पौधे में बदल चुका है।" फिर उसके नाना जी ने उससे बाहर जाकर वह पौधा देखकर आने को कहा, जो उन्होंने ज़मीन पर लगाया था। बच्चा पूरी उत्साह के साथ बाहर गया पर उसे कोई पौधा नहीं दिखा। उसने वापस आकर अपने नानाजी से कहा "नानाजी वहाँ तो कोई पौधा नहीं है।" तब उसके नानाजी उसके साथ बाहर आए, और उन्होंने एक पेड़ की तरफ इशारा करते हुए उससे कहा, "बेटा वह पौधा जो हमने लगाया था वह अब पेड़ बन चुका है।" तब उस बच्चे ने आश्चर्य के साथ उनसे पूछा, "नानाजी ये चमत्कार कैसे हुआ ? तब उसके नाना जी ने उसे समझाते हुए कहा – "बेटा, वह पौधा जो हमने अंदर लगाया था, वह पूरे साल बिना किसी परेशानी के साथ बड़ा हुआ पर, जो पौधा हमने बाहर लगाया था, उसने तेज़ धूप भी झेली और तेज़ बारिश भी। जिस कारण वह आज एक पेड़ बन चुका है।"

दोस्तों, इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि वास्तव में जो मुसीबत का सामना करता है, संघर्ष करता है, वही अपना नाम कमाता है । जिसकी ज़िदगी में कोई तकलीफ़ नहीं है, वह शायद बड़ा तो बन जाता है, मगर जिसकी ज़िंदगी में तकलीफ है, वह बड़ा तो बनता ही है और साथ ही अपना नाम भी कर जाता है। कहते हैं ना –
"जो पानी से नहाता है, वह लिबास बदलता है, मगर जो पसीने से नहाता है वह इतिहास बदलता है।" इसलिए कर जाओ कुछ ऐसा कि दुनिया बननी चाहे तुम्हारे जैसा।

मेरे सफ़र की कहानी

– प्राची श्रीवास्तव, 7/बी

मैं अपनी छुट्टियाँ बड़े अच्छे तरीके से मना रही थी। इस बार मैं अपनी छुट्टियाँ अपने ही शहर में अपने दोस्तों के साथ बीता रही थी। मैं खेल–कूद और अपने विद्यालय में आयोजित कैंप में भाग ले रही थी। मैंने अपने कैंप का फॉर्म लाकर अपने माता–पिता को दिखाया, तो उन्होंने मना कर दिया। मैं बहुत उदास हो गई थी। फिर अगले दिन जब मैं सुबह उठी, तो उन्होंने एक सरप्राईज़ दिया। उन्होंने कहा, हमलोग छुट्टियाँ मनाने पुरी जा रहे हैं । मैं खुशी से झूम उठी । जिस दिन हमारे निकलने का समय हुआ, उसी ही दिन मेरी सहेली का जन्मदिन था, मैंने उसे बधाई दी और स्टेशन परं पहुँची। इतने में मेरी ट्रेन आ गई। हमलोग ट्रेन में चढ़े। हमलोगों के सामने एक परिवार बैठा था। हमलोगों ने उनसे भी बात की। उनकी बेटी मेरी ही उम्र की थी, तो मैंने उससे दोस्ती की। हमलोग पुरी पहुँचे। मेरे साथ पुरी में एक घटना घटी। मैं एक दिन जगन्नाथ मंदिर में गई और वहाँ एक बच्ची को रोते देखा तो मैंने पूछा, ''तुम क्यों रो रही हो?'' वह बोली, कि मेरी माँ खो गई है, मुझे वो ढूँढ रही होगी। मुझे मम्मी के पास जाना है । मैं फौरन् ही मदद माँगने पुलिस के पास गई। उन्होंने वहाँ उस बच्ची की माँ को खोज निकाला और मुझे भी शाबाशी दी। मेरी छुट्टियाँ ऐसी ही हँसते–खेलते निकल गई।

सत्य का फल

– राहुल कुमार, 7/बी

एक बार विकास नगर के राजा भानु प्रताप के मन में एक बात आई। वह जानना चाहते थे कि जो लोग किसी न किसी अपराध के कारण दंडित किए जाते हैं, उनमें सचमुच कोई पश्चाताप की भावना आती है या नहीं। दूसरे दिन वह राजा अचानक अपने राज्य के बंदी गृह में पहुँच गया और सभी कैदियों से उनके द्वारा किए गए अपराध के बारे में पूछने लगा कि किस कारण से उन्होंने अपराध किया और क्यों यहाँ बंदी गृह में कैद हैं।

एक कैदी ने कहा– ''राजन ! मैंने अपराध नहीं किया है। मैं निर्दोष हूँ।'' दूसरा बंदी बोला– ''महाराज ! मुझे फँसाया गया है । मैं भी निर्दोष हूँ।''

इसी तरह सभी बंदी अपने आप को निर्दोष साबित करने लगे। फिर राजा ने अचानक देखा कि एक व्यक्ति सिर नीचे किए हुए आँसू बहा रहा था। राजा ने उसके पास जाकर पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो ? उस व्यक्ति ने बड़ी विनम्रता से कहा, ''हे राजन ! मैंने गरीबी से तंग आकर चोरी की थी। मुझे आपके न्याय पर कोई शक नहीं है। मैंने अपराध किया था, जिसका मुझे दंड मिला।''

राजा ने सोचा कि दंड का विधान सभी के अंदर प्रायश्चित का भाव पैदा नहीं करता है। लेकिन उन सभी कैदियों में से एक यही ऐसा व्यक्ति है, जो अपनी गलती का प्रायश्चित कर रहा है। यदि इस व्यक्ति को दंड से मुक्त किया जाए, तो यह अपने अंदर सुधार कर सकता है। इसलिए राजा ने उसे मुक्त कर दिया।

सीख :– हमें अपनी गलती को स्वीकार कर उसमें सुधार करनी चाहिए।

बुद्धि में बल

– अश्विन कुमार, 7/बी

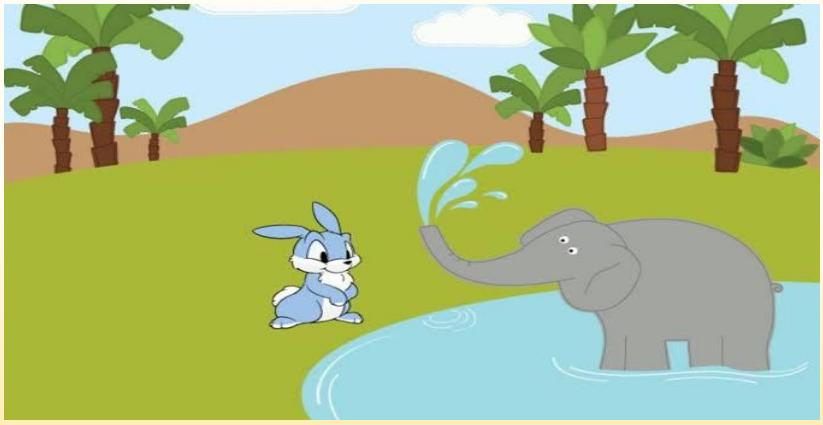

एक बार बहुत गर्मी हुई। सभी तालाब सूख गए। एक जंगल से हाथियों का झुंड पानी की तलाश में निकला। वह झुंड घूमता–फिरता एक ऐसे तालाब पर पहुँचा, जहाँ कुछ पानी था। हाथी बड़े खुश हुए और उन्होंने जल पिया तथा स्नान किया। इस तालाब के चारों ओर खरगोशों के अनेक बिल थे। हाथियों के पैरों से अनेक खरगोश मर गए। बचे हुए खरगोश एकत्र हुए और उन्होंने इस घटना पर विचार किया। हाथियों से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने एक योजना बनाई।

उनमें से एक खरगोश गजराज के पास गया और कहा कि हमारा राजा चन्द्रमा आजकल आकाश से नीचे तालाब में आया हुआ है। वह तुम्हारे तालाब पर जाने से नाराज़ है। रात को वह खरगोश गजराज को राजा से मिलाने के लिए तालाब पर ले गया। गजराज ने माथा झुकाकर उसके प्रतिबिम्ब को प्रणाम किया और वापस चला गया। उस दिन के बाद से हाथी उस तालाब पर कभी नहीं आए और सभी खरगोश आराम से रहने लगे।

शिक्षा – इस कहानी से शिक्षा मिलती है कि कोई भी अपने आकार से नही बल्कि बुद्धि से बड़ा होता है।

खूबसूरत माँ

– श्रेया 7/बी

एक गाँव में गोलू नाम का लड़का रहता था। वह अपनी माँ से कभी भी ठीक से बात नहीं करता। हमेशा उन्हें डाँटता और कड़वी बातें करता। गोलू की माँ का आधा चेहरा आग से जला हुआ था। उसका चेहरा भयानक दिखाई देता। गोलू इस बात को लेकर हमेशा दुखी रहता कि उसकी माँ खूबसूरत क्यों नहीं है। एक दिन गोलू अपने दोस्तों के साथ खेल रहा होता है, इतने में गोलू की माँ आ जाती है। गोलू भागकर एक पेड़ के पीछे छिप जाता है।

फिर गोलू की माँ चली जाती है। गोलू पेड़ के पीछे से निकलकर अपने दोस्तों से कुछ भी नहीं बोलता, अपने दोस्तों से बिना बोले वहाँ से चला जाता है। वह अपनी माँ पर घर जाकर बहुत गुस्सा करता है। गोलू अपने घर को छोड़कर एक जंगल में जाता है, वहाँ उसे एक जादुई हिरण दिखाई देता है। वह हिरण उसे उसके बचपन में घटी एक घटना सुनाता है कि कैसे उसकी माँ ने जलते हुए घर से उसे बचाया था और खुद अपनी खूबसूरती खो देती है। उसका आधा चेहरा जल जाता है। यह सब सुनकर गोलू बहुत रोता है और वह अपनी माँ के पास जाकर उनसे माफी माँगता है और माँ उसे माफ़ कर देती है। माँ उसे गले लगा लेती है। माँ प्यार और ममता का प्रतीक है इसलिए माँ का हमेशा सम्मान करना चाहिए।

जादुई खिड़की

– ठाकुर ऋतु राज

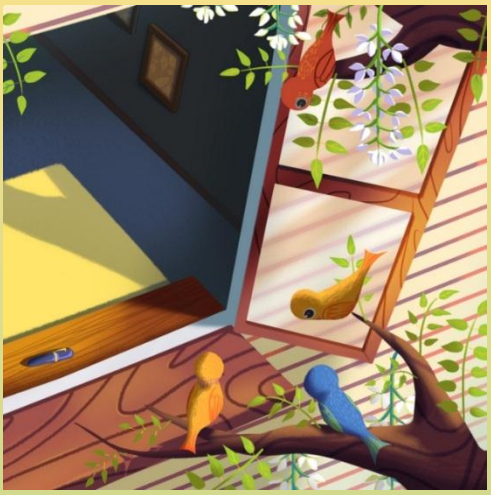

एक शहर में एक छोटा–सा बच्चा अपने माता–पिता के साथ रहता था। एक दिन वह बहुत बीमार पड़ गया। उसकी तबियत इतनी खराब थी कि उसे अधिकांश समय बिस्तर पर ही बिताना पड़ता था। दूसरे बच्चों को भी उससे मिलने पर मनाही थी। इसलिये वह बहुत उदास रहा करता था।

जिस बिस्तर पर वह लेटा रहता था, उसके पास ही एक खिड़की थी। लेटे–लेटे वह खिड़की के बाहर देखा करता था।

एक दिन उसने एक अजीब–सी आकृति अपनी खिड़की के बाहर देखी। वह एक खरगोश था, जो गाजर खा रहा था। कुछ देर बाद उस खरगोश ने अंदर देखा और कहा, 'हैलो दोस्त''! उसके बाद वह वहाँ से चला गया।

बच्चा यह सब देखकर हैरान था, वह सोच ही रहा था कि यह क्या हुआ तभी उसने बंदर को गुब्बारा फुलाते हुए देखा। फिर उसे रोज कोई न कोई जानवर अजीब–सी हरकतें करते हुए दिख जाता था।

बच्चे को यह सब देखकर काफ़ी मज़ा आता और वह खूब खुश होकर नाचता था। कभी–कभी उसे यह सब सपना लगता था। वह सोचता था कि यह सब एक जादू है, इसलिए घर पर उसने यह बात किसी को भी नहीं बताई।

जब से उसे अपनी खिड़की पर ये मजेदार नज़ारे दिखने लगे उसकी उदासी दूर होने लगी। कुछ दिनों में वह पूरी तरह ठीक होकर स्कूल जाने लगा।

स्कूल में अपने सबसे अच्छे मित्र को यह बात बताई। जब वह बता रहा था, तभी उसे अपने दोस्त के बैग में कुछ रंग–बिरंगा सा दिखाई पड़ा।

उस बैग के अंदर कई रंग–बिरंगे फैंसी ड्रेस के कपड़े थे, जिसे पहनकर वह रोज उस बच्चे की खिड़की पर जाकर अपनी हरकतों से उसे हँसाता था। यह देखते ही सारी बात उस बच्चे को समझ में आ गई कि खिड़की के बाहर अलग–अलग वेशभूषा में कौन आता था ?

मेरी माँ

– निधि प्रिया 7/बी

''माँ'' एक ऐसा शब्द है, जिसे दुनिया का हर बच्चा अपने मुँह से सबसे पहले लेता है। माँ से बेहतर किसी को भी नहीं माना जा सकता है। उसके प्यार और देख–रेख के सामने दुनिया की मूल्यवान से मूल्यवान वस्तु भी धूल समान हैं।

''खुदा का दूसरा रूप है माँ
ममता की गहरी झील है माँ,
वे घर किसी जन्नत से कम नहीं
जिस घर में खुदा की तरह पूजी जाती है माँ।

हर एक के जीवन में माँ एक अनमोल इंसान के रूप में होती है, जिसके बारे में शब्दों से बयाँ नहीं किया जा सकता है। ऐसा कहा जाता है कि भगवान हर किसी के साथ नहीं रह सकते हैं। इसलिए उसने माँ को बनाया है। एक माँ हमारी हर छोटी–बड़ी ज़रूरत का ध्यान रखने वाली और खूबसूरत इंसान होती है। वह बिना किसी व्यक्तिगत लाभ के हमारी हर ज़रूरत का हर पल ध्यान रखती है।

स्कूल का पहला दिन

– आर्यन चौधरी 2/बी

यह कहानी है सूरज की, जो अपने माता–पिता के साथ एक शहर में रहता था और उसे नए स्कूल में जाना था। वह नाश्ता कर ही रहा था कि तभी स्कूल बस आ गई। वह अपना स्कूल बैग टाँगकर और अपने माता–पिता को हाथ हिलाकर बस में चढ़ जाता है। सूरज बस में चढ़ता है और वह देखता है कि आगे की सीट खाली है। वह वहाँ बैठने जा ही रहा था कि तभी पीछे बैठा राहुल उसको अपने पास बैठा लेता है। सूरज राहुल से पूछता है कि उसने उसे वहाँ क्यों नहीं बैठने दिया। राहुल बोलता है कि बैठो, सब समझ में आ जाएगा, तभी बस रुकती है, और वहाँ रमेश चढ़ता है। रमेश उसी सीट पर बैठता है जिसपर राहुल ने सूरज को बैठने से मना किया था। रमेश के बस में आते ही सभी बच्चे घबरा जाते हैं। सूरज सभी बच्चों को घबराए हुए देख रहा था। रमेश आगे बैठे हुए बच्चों को डराते हुए पूछा–''क्यों रे! तुम सब कैसे हो ?'' बच्चे डरते हुए बोलते हैं, ''ठीक हैं रमेश भाई।'' रमेश बच्चों को तंग कर रहा था, कभी उनके गाल खींचता तो कभी बाल, सभी बच्चे सहमे थे। तभी राहुल सूरज से बोलता है देखा ! इसलिए मैंने मना किया था। सूरज बोलता है –''शुक्रिया दोस्त! तुमने मुझे बचा लिया परन्तु इसकी शिकायत तुम सब टीचर से क्यों नहीं करते।'' राहुल बोला, ''शिकायत किया था परन्तु इसपर कोई असर ही नहीं पड़ता और जिसने शिकायत की थी, उसे इसने इतना तंग किया कि उसे स्कूल ही छोड़ना पड़ा।'' सूरज अपनी क्लास में पढ़कर छुट्टी के बाद जब घर लौटता है तो उसकी माँ उससे स्कूल में बिताए हुए पहले दिन के बारे में उससे पूछती हैं । स्कूल का पहला दिन कैसा रहा ? सूरज हाथ–मुँह धोने के बाद खाने के टेबल पर बैठा था, वह माँ को बस में हुई सारी घटना को बताता है। सोचने के बाद माँ बाहर से कुछ लकड़ी लाती है । एक–एक करके माँ लकड़ी तोड़ती है, वह टूट जाती है। फिर माँ इकट्ठा चार–पाँच छड़ी तोड़ने की कोशिश करती है तो वह नहीं टूटती। सूरज की समझ में सारी बात आ जाती है। वह खुश हो जाता है और अगले दिन उसने यह सारी बात अपने बस में बैठे दोस्तों को बताता है। तभी रमेश बस में आता है, वह बच्चों को जैसे ही तंग करना शुरू करता है, सभी बच्चे साथ मिलकर उसको सबक सिखाते हैं । रमेश उनसे माफ़ी माँगता है। सभी बच्चे खुश हो जाते हैं।

शिक्षा – इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें मिलजुल कर एक साथ रहना चाहिए।

शब्द–निर्झर

प्यारे बच्चों !

इस प्रतियोगिता के तहत नीचे एक चित्र दिया गया है। इस चित्र को देखकर आपके मन में जो भी भाव आ रहे हों, उसे आप कविता के रूप में जल्द से जल्द कागज़ पर उतारने का प्रयास कीजिएगा। प्रथम तीन चयनित कविताओं को प्रकाशित एवं पुरस्कृत किया जाएगा, तो हो जाइए तैयार और लिख भेजिए अपनी कविता पत्रिका के ईमेल cvbokaro.naisubah19@gmail.com पर। आप अपनी कविता 10 अक्टूबर 2019 तक भेज सकते हैं।

श्री महेश त्रिपाठी,
सचिव, चिन्मय विद्यालय, बोकारो

प्रश्न : बी. एस. एल से लेकर चिन्मय विद्यालय तक का सफ़र आपने कैसे तय किया ?

उत्तर : पहले मैं बी. एस. एल, बोकारो में ट्रैफिक, एवं इचार्ज सर्विस में जनरल मैनेजर के रूप में नियुक्त हुआ और करीब 20 वर्षों तक यहाँ अपनी सेवा देने के पश्चात् मैं यहाँ से सेवानिवृत्त हुआ। 1976–77 के वर्षों से मैं चिन्मय मिशन से जुड़ा। पहले मैं चिन्मय मिशन में सेक्रेटरी(सचिव) के पद पर था और 1985 से 1996 तक मैं चिन्मय विद्यालय के कोषाध्यक्ष के पद पर था। वर्ष 2010 में मुझे इस चिन्मय विद्यालय, बोकारो में सचिव के रूप में अपना पदभार सँभालने का अवसर प्राप्त हुआ। यहाँ की संस्कृति एवं माहौल मुझे अपनी ओर इतना आकर्षित करने लगी कि मैं इससे पूरी तरह से जुड़ गया। इस प्रकार, मैंने बी. एस. एल से चिन्मय विद्यालय तक का सफ़र तय किया।

प्रश्न : क्या आप चिन्मय विद्यालय में आने से पूर्व चिन्मय मिशन से जुड़े थे और कब ?

उत्तर : जी हाँ, मैं चिन्मय विद्यालय में आने से पूर्व चिन्मय मिशन से वर्ष 1976–77 से जुड़ा हुआ हूँ।

प्रश्न : चिन्मय विद्यालय में प्रवेश से लेकर वर्तमान तक में आपने क्या–क्या बदलाव देखे?

उत्तर : शुरुआत से लेकर वर्तमान तक मैंने कई बदलाव देखे हैं। जैसे– सप्तर्षि–भवन का निर्माण, मानव–संसाधन कक्ष, चिन्मय–वाणी, शिक्षक–शिक्षिकाओं हेतु कक्ष, नया पुस्तकालय, सुरक्षा विभाग में अनुशासन के नियम, प्ले–स्टेशन का निर्माण, नई प्रयोगशालाएँ, सर्वर कक्ष–लैन सिस्टम, कंप्यूटरीकरण, डिजिटलाइजेशन, यातायात की सुविधाओं में यथा–नई बसें, विंगर की सुविधा, जेनेरेटर, तपोवन–सभागार की दीवार–सीमा इत्यादि।

प्रश्न : हिंदी भाषा के प्रति आपकी रुचि कैसे उत्पन्न हुई ?

उत्तर : बचपन से ही मेरी रुचि हिंदी भाषा के प्रति थी। हमेशा एक डोर मुझे हिंदी भाषा से बाँधे रखती थी। मेरी भाषा के प्रति इसी रुचि ने ही मुझे हिंदी मे स्नातकोत्तर करने की प्रेरणा दी। हालाँकि मेरे पिताजी बचपन से ही मुझे अभियंता बनाना चाहते थे। इसलिए मैंने आई.आई.टी., दिल्ली से अपना इंजीनियरिंग कोर्स भी पूरा किया है।

प्रश्न : आपने किन–किन रचनाकारों को पढ़ा है?

उत्तर : मैंने हिंदी साहित्य के लगभग सभी रचनाकारों को पढ़ा है। उनमें प्रमुख हैं–सूरदास (भ्रमरगीत सार), घनानंद, आधुनिक काल के मुक्तिबोध, धूमिल, रमानाथ अवस्थी, नीरज इत्यादि)।

प्रश्न : आपके सर्वप्रिय रचनाकार कौन हैं और क्यों ?

उत्तर : मेरे सर्वप्रिय रचनाकर सूरदास जी हैं, जिन्होंने अपनी लेखन–प्रतिभा से अपनी रचना में विविध रसों को निचोड़ कर साहित्य की पराकाष्ठा को शिखर तक पहुँचाया है।

प्रश्न : आपकी पहली रचना क्या है और कब लिखी गई?

उत्तर : मेरी पहली रचना मुक्तक की रूबाइयाँ हैं, जिसे मैंने 13–14 वर्ष की आयु में लिखा था।

प्रश्न : हिंदी भाषा में अधिगम–शिक्षण को और भी बेहतर बनाने के लिए आपके क्या दृष्टिकोण हैं?

उत्तर : हिंदी भाषा में अधिगम शिक्षण को और भी बेहतर बनाने के लिए हमें अपनी हिंदी भाषा की जड़ों को मजबूत बनाए रखना होगा एवं शब्दों को विस्तार देना होगा किंतु इसी के साथ हमें आगत

भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात् कर उसे अंगीकृत करना होगा अर्थात् हमें हिंदी भाषा के द्वार अन्य भाषाओं के लिए खोलकर रखने होंगे।

प्रश्न : आगामी दस वर्षों में आपकी हिंदी शिक्षक–शिक्षिकाओं से क्या–क्या अपेक्षाएँ हैं?

उत्तर : हिंदी शिक्षक–शिक्षिकाओं की आगामी दस वर्षों में विशेष भूमिकाएँ हैं। जैसे–हिंदी भाषा के प्रति प्रेम, आस्था, निष्ठा, समर्पण, गौरवान्वित होने का भाव जागृत करना।

- भाषा और साहित्य का गहन अध्ययन होना।
- संप्रेषण–कौशल के नए–नए माध्यम के प्रयोग सीखना एवं सिखाना।
- इंटरनेट एवं कंप्यूटर की भाषा से अवगत होना एवं इसके नए–नए माध्यम से खुद को नवीनीकृत करते रहना, क्योंकि भविष्य में यह सीखने की प्रक्रिया में एक सशक्त माध्यम बनकर उभरेगा।
- हिंदी शिक्षण में समय के अनुरूप अपनी परंपराओं एवं मूल्यों को बचाए रखने की चुनौती रखना। हिंदी भाषा की प्रकृति एवं साहित्यिक प्रवृति जमीनी हकीकत से गहराई तक जुड़ी रहे और साहित्य में सामाजिक यथार्थ के साथ भविष्य की आशामयी किरणें परिलक्षित होती रहे।

प्रश्न : हिंदी भाषा में विद्यार्थियों के लिए भविष्य में और क्या–क्या स्कोप हो सकते हैं?

उत्तर : एक अच्छे इंसान के रूप में विकसित होने की दिशा में हिंदी भाषा के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है। जीवन के आवश्यक मानवीय मूल्यों की समझ जितनी गहराई से हिंदी भाषा के माध्यम से हो सकती है, दूसरी जगह यह काफ़ी मुश्किल है। वर्तमान में देश में हिंदी भाषा समझने वालों की संख्या लगभग 62 प्रतिशत से अधिक है और आशा है कि भविष्य में मानक हिंदी जानने वालों की माँग, दिनोंदिन बढ़ती ही जाएगी। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में और व्यवसायों में हिंदी एक सशक्त माध्यम के रूप में मंच प्रदान करेगी। इसलिए इस क्षेत्र में उनका भविष्य बहुत ही उज्ज्वल है।

प्रश्न : आपने चिन्मय विद्यालय से बाहर भी हिंदी भाषा को सुदृढ़ बनाने हेतु क्या प्रयत्न किए हैं?

उत्तर : मैं चिन्मय विद्यालय, बोकारो से बाहर देश एवं विदेश में हिंदी भाषा को सुदृढ़ बनाने हेतु होने वाली परिचर्चाओं एवं कार्यशालाओं में आवश्यक रूप से शामिल रहा हूँ एवं अनौपचारिक वार्तालाप में भागीदारी की है। मेरा मानना है कि इस प्रकार के कार्यक्रम आत्मसंतुष्टि प्रदान करते हैं।

प्रश्न : हिंदी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए आप क्या शुभकामना संदेश देना चाहेंगे?

उत्तर : हिंदी के सभी शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों विशेषकर चिन्मय विद्यालय के सदस्यों को हार्दिक शुभकामना देता हूँ एवं उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

लघु नाटक

रॉली प्रियदर्शी

चिन्मयानंद स्वामी जी पर आधारित एक लघु नाटक

वाचक– *पूजनीय स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती का जीवन तड़ित के समान तेजस्वी और तूफ़ान के सदृश वेगवान था। वे अपने दिव्य कार्यकाल में जो कुछ कर गए वह आगामी अनेक शताब्दियों तक विश्व के इतिहास प्रवाह को दिशा और गति प्रदान करता रहेगा। वे बहुमुखी प्रतिभा से संपन्न थे यद्यपि उन्हें एक महान देशभक्त, लेखक, विचारक, वक्ता, मानवप्रेमी आदि विशेषणों से विभूषित किया जा सकता है तथापि मूलतः वे एक सर्वव्यापी ब्रह्मवेत्ता, संन्यासी, वेदांत के निष्णात् आचार्यों में से एक थे।*

वाचिका– *ऐसे महान विलक्षण व्यक्तित्व के धनी स्वामी चिन्मयानंद सरस्वती का जन्म 8 मई, 1916 को एर्नाकुलम, केरल में हुआ था। उनके बचपन का नाम बालकृष्ण मेनन था। पिता न्याय विभाग में एक न्यायाधीश थे। बचपन से ही उनकी बुद्धि तीव्र थी और पढ़ने में वे होशियार थे। उनकी मुख्य भाषा अंग्रेज़ी थी। उनकी गिनती हमेशा आदर्श छात्रों में की जाती थी। लखनऊ विश्व विद्यालय से उन्होंने विधि और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। विविध रुचियों वाले बालकृष्ण मेनन विश्व विद्यालय स्तर पर अध्ययन के साथ–साथ अन्य गतिविधियों में भी संलग्न थे।*

वाचक– *बाद में उनका महान विलक्षण व्यक्तित्व युवा क्रांतिकारी, मेधावी, अन्वेषक, पत्रकार, जिज्ञासु आदि विभिन्न सोपानों से गुजरता हुआ संन्यास के उच्चतम शिखर तक पहुँचा।*

वाचिका– *तुम जानते हो, उनके जीवन की कुछ विलक्षण घटनाएँ हैं, जो बचपन में ही घटित हुई थीं और उनके इस महान संन्यासी जीवन के रहस्य को उद्घाटित करने वाली थीं।*

वाचक– *कौन–सी घटना?*

वाचिका– *जब वे बिल्कुल बच्चे थे तब उनके घर के आध्यात्मिक माहौल में संतों का आगमन होता रहता था। 28 वर्ष की कम उम्र में सद्ज्ञान प्राप्त करने वाले महान योगी संत स्वामी चैतंबी विशेष अवसरों पर अक्सर उनके घर आते रहते थे। उनको बालक मेनन से विशेष लगाव था। छोटे से बालक के साथ खेलते–खेलते कानों में रहस्यमयी भाषा में लंबी वार्तालाप करते, जिसे कोई नहीं समझ पाता। आखिर एक दिन मेनन की माँ ने पूछा––*

दृश्य 1

माँ– *स्वामी जी आपका विशेष प्यार और आशीर्वाद है इस बालक पर, परंतु मुझे समझ में नहीं आता कि आप इतनी देर इस बच्चे से इस गुप्त भाषा में क्या वार्तालाप करते हैं? इसे क्या सीख देते हैं? ज़रा हमें भी बताइए।*

स्वामी जी– *ठीक है, यह बात समझ लो, यह जो है, वह सब कुछ मेरे और इस छोटे–से बालक के बीच में है। मेरी हर बात वह समझता है और जानता है। उसकी नज़र देखो, उसका चेहरा तो देखो, वह कितना खुश है।*

माँ– *स्वामी जी, इतना प्रसन्न तो सचमुच वह आपके पास ही होता है। स्वामी जी आपसे प्रार्थना है कि आप हमेशा अपना आशीर्वाद इसपर बनाए रखिएगा।*

स्वामी जी– *जो कुछ उसे बताना था, देना था, मैंने दे दिया। वह मेरी हर बात समझ चुका है। अच्छा, इस बात का विशेष ध्यान रखना।*

वाचिका– *यही नहीं, बचपन में ही अपने पसंदीदा भगवान शिव के चित्र को एकटक लगातार देखने के बाद आँखें बंद कर लेते और उनकी पूरी छवि का ध्यान करने का प्रयास करते। अपने ध्यान की इस नई प्रक्रिया द्वारा वे जब भी आँखें बंद करते शिव भगवान की मधुरम छवि उनकी दृष्टि–पटल पर स्वयं आ जाती। इस तरह बचपन में ही ध्यान की एक नई विधि का उन्होंने आविष्कार किया था। वे बचपन से ही हमेशा रात में बैठकर एकाग्रचित्त होकर ध्यान करना कभी नहीं भूलते थे।*

वाचक– *एक इसी प्रकार संत के कृपा से जुड़ी दूसरी घटना के बारे में गुरुदेव ने लिखा है ।*

वाचिका– *कौन–सी घटना?*

वाचक– *दसवीं के बाद रेल से दक्षिण की यात्रा करते हुए वे घूम रहे थे। जब रेल एक पहाड़ी के पास तिरुनामल्लाई के मंदिर के पास से गुजरी, सारे यात्री खिड़की के पास आकर प्रणाम करने लगे। वे सभी लोग महर्षि रमन्ना के आश्रम के बार में बातें करने लगे। मेनन ने अपने अंदर इस महर्षि के प्रति इतना आकर्षण महसूस किया कि अगली रेल से वे तुरंत तिरुनामल्लाई पहुँच गए। तमिलनाडु की कड़कती धूप में क़ाफी दूर चलने के बाद एक बड़ी–सी कुटिया में पहुँचे।*

वाचिका– *फिर क्या हुआ?*

वाचक– *उन्होंने देखा अँधेरे माहौल में काफी भीड़ बैठी है और एक इंसानी आकृति सामने की ओर लेटी हुई है। इस अँधेरे माहौल से समायोजन करते हुए उन्होंने देखा कि आगे थोड़ी–सी जगह है और वे वहीं जाकर बैठ गए। लंगोट के अलावा कोई कपड़ा उस महर्षि के शरीर पर नहीं था। उनकी आँखें बंद थीं। जैसे ही मेनन की आँखें उनकी बंद आँखों पर टिकी, उनकी आँखें उसी क्षण खुल गईं और एकटक उन्हें देखते हुए मानो उनके अंदर झाँकने लगी।*

दृश्य 2

स्वामी चिन्मयानंद– *उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि उन्होंने मेरे अंदर सब कुछ देख लिया। वे मेरे बारे में सब कुछ जान गए, वो सब भी जो अपने बारे में मुझे भी नहीं पता था। मैं बता नहीं सकता कि मुझे क्या हुआ? उसी क्षण मुझे लगा कि मेरी हर मौन खुल गई है। एक पवित्रता, अनंत शांति, सत्यता का बोध और मेरे अंदर एक दिव्य ऊर्जा का संचार। उसी पल मेरे अंदर का सारा प्रश्न और द्वंद्व पूरी तरह से समाप्त हो गया और उन्होंने आँखें बंद कर ली। एक सम्मोहक शक्ति के द्वारा वहाँ कब तक बैठा रहा मुझे याद नहीं। फिर किसी तरह जबरदस्ती बल लगाकर उठा, किंतु मेरा सिर घूम रहा था। उस समय मुझमें वास्तविकता होने के कारण मैं स्वयं को समझा रहा था कि ज़रूर उस व्यक्ति ने मुझे सम्मोहित कर दिया होगा। शायद इसमें मेरी ही दुर्बलता रही होगी। परंतु जो लड़का अब वहाँ से लौट रहा था वह उस लड़के से अब बिल्कुल अलग था जो वहाँ पहुँचा था। इस घटना ने मेरी ज़िंदगी बदल दी थी, उस स्थिति का सच्चा ज्ञान अपने गुरुदेव तपोवन स्वामी की कृपा से प्राप्त हुई, जो महान स्थिति मानो पहले उसी दिन उसी क्षण सिर्फ उस संन्यासी की हल्की–सी नज़र से मुझे मिल गई थी।*

यह गीता के भक्तियोग की सरल कुछ और ज्ञान योग की कठोर साधना के बाद एक ही महान उस स्थिति प्राप्त होने का एहसास था।

वाचिका– *अंततः वे भारत के प्रसिद्ध आध्यात्मिक चिंतक तथा वेदांत दर्शन के विश्व प्रसिद्ध विद्वान बने। उन्होंने सारे भारत में भ्रमण करते हुए देखा कि देश में धर्म संबंधी अनेक भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। उनका निवारण कर शुद्ध धर्म की स्थापना करने के लिए स्वामी चिन्मयानंद ने गीता ज्ञान यज्ञ प्रारंभ किया और 1953 में चिन्मय मिशन की स्थापना हुई। इस समय देश एवं विश्व के अन्य भागों में इसके 300 से अधिक केंद्र चल रहे हैं।*

आइए, आज गुरुदेव जी की जयंती पर हम सब गुरुदेव की स्तुति एक साथ मिलकर करें।

---XXXX---

कथा संसार
अधूरी कहानी . . . .

प्यारे बच्चों,

कहानी पूर्ति कल्पना को रचना में ढालने की एक क्रिया है, जो एक बिंदु से कल्पना भिन्नता के अनुसार अनंत दिशाओं में प्रसार की संभावना रखती है, तो आइए आप भी अपनी कल्पना को निश्चित बिंदु से प्रारंभ करके तुरंत एक कहानी रच डालिए . . .

प्रथम तीन चयनित कहानियों को पुरस्कृत किया जाएगा एवं अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। आप अपनी कहानी हिंदी विषय शिक्षक को 10 अक्टूबर, 2019 तक दे दें या cvbokaro.naisubah19@gmail.com पर 10 अक्टूबर, 2019 तक भेजें।

(अधूरी कहानी)

काली अँधेरी रात थी। मैं अपने माता–पिता के साथ गाड़ी की पिछली सीट पर बैठी थी। अचानक मेरी नज़र कुछ सामने देखकर . . . .

चित्र वीथिका

राजा रवि वर्मा –

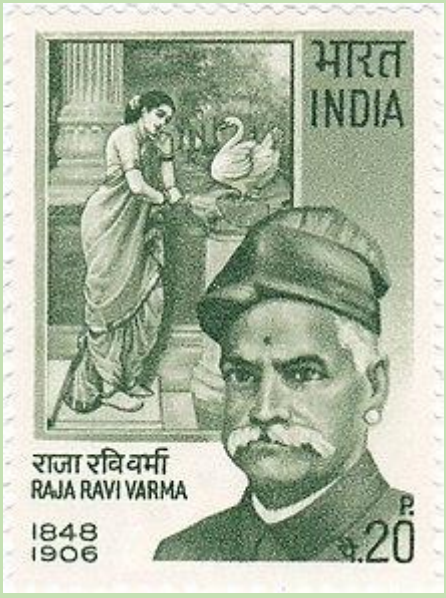

राजा रवि वर्मा का जन्म 29 अप्रैल, 1848 को केरल के एक छोटे से शहर किलिमनूर में हुआ था। पाँच वर्ष की छोटी–सी आयु में ही उन्होंने अपने घर की दीवारों को दैनिक जीवन की घटनाओं से चित्रित करना प्रारंभ कर दिया। उनके चाचा कलाकार राज राजा वर्मा ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और कला की प्रारंभिक शिक्षा दी। चौदह वर्ष की आयु में ही वे उन्हें तिरुवनंतपुरम ले गए, जहाँ राजमहल में ही उनकी तैल–चित्रण की शिक्षा हुई । बाद में चित्रकला के विभिन्न आयामों में दक्षता के लिए उन्होंने मैसूर, बड़ौदा और देश के अन्य भागों की यात्रा की। उनकी सफलता का श्रेय उनकी सुव्यस्थित कला शिक्षा को जाता है। उन्होंने पहले पारंपरिक तंजौर कला में महारत प्राप्त की और फिर यूरोपीय कला का अध्ययन किया।

रोचक तथ्य – अक्टूबर 1907 में उनके द्वारा बनाई गई एक ऐतिहासिक कलाकृति जो भारत में ब्रिटिश राज के दौरान ब्रितानी राज के एक उच्च अधिकारी एवं महाराज की मुलाकात को चित्रित करती है, 1.24 मिलियन डालर में बिकी । इस पेंटिंग में त्रावणकौर के महाराज और भाई को मद्रास के गर्वनर जनरल ग्रेनविले को स्वागत करते हुए दिखाया गया है।

कलाकृतियाँ – उनकी कलाकृतियों को तीन प्रमुख श्रेणियों में बाँटा गया है –

- प्रतिकृति या पोट्रेट
- मानवीय आकृतियों वाले चित्र
- इतिहास एवं पुराण की घटनाओं से संबंधित चित्र

यद्यपि जनसाधारण में उनकी लोकप्रियता इतिहास, पुराण एवं देवी–देवताओं के चित्रों के कारण ही हुई लेकिन तैल माध्यम में बनी अपनी प्रतिकृतियों के कारण वे विश्व में सर्वोत्कृष्ट चित्रकार के रूप में विख्यात होने लगे। उनका देहांत 2 अक्टूबर 1906 को हुआ।

लुसियन फ्रायड –

लुसियन फ्रायड एक ब्रिटिश चित्रकार एवं ड्राफ्ट्समैन थे, जो आलंकारिक कला में विशेषज्ञता रखते थे, और उन्हें 20 वीं शताब्दी के चित्रकारों में से एक के रूप में जाना जाता है। उनका जन्म बर्लिन में हुआ था, जो यहूदीं वास्तुकार एल. फ्रायड के बेटे और सिगमंड फ्रायड के पोते थे। उनके अनुसार –

''मैं ऐसी तस्वीर में कभी कुछ भी नहीं डाल सका जो वास्तव में मेरे सामने नहीं था। यह एक व्यर्थ झूठ होगा, केवल थोड़ी सी कलात्मकता।''

उन्होंने लंदन में सेंट्रल स्कूल ऑफ आर्ट्स में अध्ययन किया। उनका काम 1939 और 1943 में 'होरिजन' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। 1951 में, उन्होंनें लिडपूल में 'वाकर आर्ट गैलरी' में एक 'कला परिषद्' पुरस्कार जीता। इन्होंने पारंपरिक यूरोपीय चित्रकला की चित्रात्मक भाषा को एक विरोधी–रोमांटिक टकराव की शैली में रखा।

सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा का वर्चस्व

वर्तमान में अपने विचारों या भावों को आमजन तक पहुँचाने में सोशल मीडिया महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह एक **'वर्चुअल वर्ल्ड'** बनाता है, जो इंटरनेट के माध्यम से एक व्यक्ति को दूसरों से जोड़ता है। सोशल मीडिया के माध्यम से ही अनेक आंदालोन लड़े गए एवं मन की आवाज़ को घर–घर तक पहुँचाया गया। लोकप्रियता के प्रचार–प्रसार में मीडिया एक बेहतरीन प्लेटफार्म है। आज फिल्मों के ट्रेलर, टेलीविजन के धारावाहिक का प्रसारण भी सोशल मीडिया के माध्यम से किया जा रहा है। वीडियो तथा ऑडियो–चैट भी सोशल मीडिया के माध्यम से सुगम हो गए हैं, जिनमें फेसबुक, व्हाट्सअप्प, इंस्टाग्राम, ब्लॉग कुछ प्रमुख प्लेटफार्म हैं।

पहले जब सोशल मीडिया का अवतार हुआ, तो तब ज़्यादातर लोग अंग्रेजी भाषा का ही प्रयोग करते थे, उस समय हिंदी भाषी लोग सोशल मीडिया का सहज उपयोग नहीं कर पाते थे। लेकिन अब बदलते परिदृश्य के साथ–साथ हिंदी भाषा ने सोशल मीडिया के मंच पर दस्तक देकर अपने अस्तित्व को और भी बुलंद तरीके से स्थापित किया है। हिंदी का प्रयोग लोगों के लिए अलग पहचान दिलाने में आकर्षक साबित हुआ है। आज विभिन्न कंपनियाँ हिंदी भाषा में अपना विज्ञापन और सूचनाओं का प्रचार–प्रसार करती है, क्योंकि उनका मानना है कि आज हिंदी भाषा का विस्तृत फलक है और उन्हें भी अपनी सूचनाओं को बहुसंख्यक लोगों तक पहुँचाना है, तो वही भाषा चुननी होगी, जिसके पाठक–वर्ग अधिक हों तथा ग्राहक महज और पारिवारिकता महसूस करें।

इसके लिए हिंदी से अच्छा विकल्प हो ही नहीं सकता। सोशल मीडिया में हिंदी भाषा का वर्चस्व का प्रमुख कारण यह है कि हिंदी भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम है एवं संबंधित पोस्ट के भावों को समझने में असुविधा नही होती है। लिखी गई बात पाठक तक उसी भाव में पहुँचती है, जिस भाव से लिखा जाता है। सोशल मीडिया पर मौजूद हिंदी का ग्राफ दिन दो गुनी रात चौगुनी आसमान छू रहा है। यह हिंदी भाषा की सुगमता, सरलता और समृद्धता का ही प्रतीक है। वैश्विक पटल पर आज हिंदी सोशल हिंदी सोशल मीडिया के मंच पर विराजमान है।

आज उपभोक्ताओं की संख्या पिछले साल में 100 प्रतिशत तक बढ़कर ढाई करोड़ पहुँच गई, जबकि शहरी इलाकों में यह संख्या 35 प्रतिशत बढ़कर 11.8 करोड़ रही। सबसे अहम बात यह है कि न केवल उम्रदराज भारतीय, बल्कि अंग्रेजी भाषा का अच्छा ज्ञान रखने वाले युवा वक्ता भी अब सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा में ट्विटर के माध्यम से शब्दों के कहने के अभ्यास को संभव बनाया है। हिंदी भाषा में किये गये ट्वीट ने आज सार्वजनिक अभिव्यक्ति की ओर बहुसंख्यक समुदाय का ध्यान आकर्षित करवाया है। ट्विटर ने करोड़ों लोगों को एक नई ताकत, छोटी बड़ी बहसों में भागीदारी सुनिश्चित की है। गत 8 वर्षो में हिंदी भाषा का प्रयोग सोशल मीडिया पर करने वालों की संख्या में लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है एवं भारत के अतिरिक्त नेपाल, मॉरिशस, कैरेबियन देशों और कनाडा आदि देशों में भी हिंदी भाषा का प्रयोग करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसके अलावा इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, मध्य एशिया में भी इसे बोलने–समझने वाले पाठक हैं। वैश्वीकरण के दौर में भारत के बढ़ते प्रभाव के कारण पिछले कुछ समय से हिंदी के प्रति विश्व के लोगों की रुचि बढ़ी है। यह अहम तथ्य है कि किसी भी मीडिया की लोकप्रियता उसके पाठकों की संख्या पर निर्भर करती है। इससे स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया के वैश्विक मानचित्र पर हिंदी भाषा का ग्राफ निरंतर प्रगतिशील है और रहेगा।

हिंदी प्रश्नोत्तरी

यह प्रश्नोत्तरी सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए है। प्रतिभागी अपना उत्तर पत्रिका के ईमेल पर 10 अक्टूबर, 2019 तक भेज सकते हैं, प्रथम तीन चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया जाएगा एवं इस प्रश्नोत्तरी का उत्तर अगले अंक में दिया जाएगा।

1. *रघुवीर सहाय किस तारसप्तक के कवि हैं?*
2. *जयशंकर प्रसाद के किस नाटक का आधार कल्हण कृत 'राजतरंगिनी' है?*
3. *नाटक के पर्दे के पीछे दी जाने वाली सूचना को क्या कहते हैं?*
4. *रामचंद्र शुक्ल ने प्रथम नाटककार किसे माना है?*
5. *प्रसाद जी की अंतिम रचना कौन–सी है?*
6. *'नहुष' नाटक किस भाषा में रचित है?*
7. *हिंदी साहित्य में एकांकी सम्राट के नाम से कौन विख्यात हैं?*
8. *प्रेमचंद की 'शतरंज के खिलाड़ी' किस प्रकार की रचना है?*
9. *यथार्थवाद एवं छायावाद निबंध के रचयिता कौन हैं?*
10. *'कैदी और कोकिला' किसकी रचना है?*
11. *'आधुनिक मीरा' के नाम से कौन विख्यात है?*
12. *'कमाल' और 'कमाली' किस कवि के संतान हैं?*
13. *'बंगाल का अकाल' किस प्रकार की रचना है?*
14. *प्रथम महिला आत्मकथा लेखिका कौन है?*
15. *'सूर वात्सल्य' और 'वात्सल्य सूर' किसकी उक्ति है?*
16. *'हिंदी साहित्य के 'विलियम वर्ड्सवर्थ' के नाम से सर्वाधिक प्रचलित कौन है?*
17. *भक्तिकाल को सर्वप्रथम किसने 'स्वर्णकाल' कहा?*
18. *आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को क्या नाम दिया?*
19. *कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' किस समीक्षक ने कहा है?*
20. *'साखी' का मूल तत्सम शब्द क्या है?*
21. *'मैथिल कोकिल' के नाम से कौन जाने जाते हैं?*
22. *हिंदी साहित्य के इतिहास–लेखन की परंपरा का सूत्रपात किसने किया?*
23. *प्रथम राजभाषा आयोग का गठन कब किया गया?*
24. *चौपाई के चारों चरणों में कितनी मात्राएँ होती हैं?*
25. *'संस्कृति के चार अध्याय' किसकी रचना है?*

रेत घड़ी

धर्मवीर भारती –

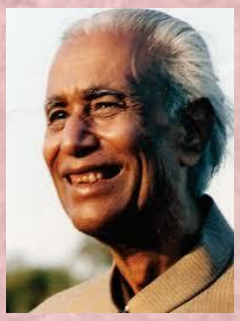

धर्मवीर भारती आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख लेखक, कवि, नाटककार और सामाजिक विचारक थे।

इनका जन्म 25 दिसंबर, 1926 को इलाहाबाद के अंतर सुइया मुहल्ले में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री चिरंजीव लाल वर्मा और माँ का नाम श्रीमती चंदा देवी था। स्कूली शिक्षा डी.ए.वी. हाई स्कूल में और उच्च शिक्षा प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई । प्रथम श्रेणी में एम. ए. करने के बाद डॉ धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में सिद्ध साहित्य पर शोध–प्रबंध लिखकर उन्होंने पी.एच.डी. प्राप्त की।

घर और स्कूल से प्राप्त आर्यसमाजी संस्कार, इलाहाबाद विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण, देश–भर में होने वाली राजनैतिक हलचलें, बाल्यावस्था में ही पिता की मृत्यु और उससे उत्पन्न आर्थिक संकट, इन सबने उन्हें अति संवेदनशील, तर्कशील बना दिया। उन्हें जीवन में दो ही शौक थे : अध्ययन और यात्रा।

भारती जी के साहित्य में उनके विशद् अध्ययन और यात्रा–अनुभवों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। ''जानने की प्रक्रिया में होने और जीने की प्रक्रिया में जानने वाला मिजाज जिन लोगों का है, उनमें मैं अपने को पाता हूँ।'' (ठेले पर हिमालय)

उनकी दृष्टि में वर्तमान को सुधारने और भविष्य को सुखमय बनाने के लिए आम जनता के दुख–दर्द को समझने और उसे दूर करने की आवश्यकता है। दुख तो इस बात का है कि आज जनतंत्र में तंत्र शक्तिशाली लोगों के हाथों में चला गया है और जन की ओर किसी का ध्यान नहीं है। अपनी रचनाओं के माध्यम से इसी जन की आशाओं, आकांक्षाओं, विवशताओं, कष्टों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

1972 में पद्मश्री से अलंकृत डॉ धर्मवीर भारती को अपने जीवन काल में अनेक पुरस्कार जैसे ''हल्दी घाटी, ''श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार'', ''भारत भारती पुरस्कार'', 'महाराष्ट्र गौरव' आदि प्राप्त हुए।
4 सितंबर 1997 को मुंबई में उन्होंने अंतिम साँस ली।

महाश्वेता देवी –

महाश्वेता देवी एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता और लेखिका थीं। उन्हें 1996 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उनका जन्म 14 जनवरी, 1926 को अविभाजित भारत के ढाका में हुआ था। उनके पिता मनीष घटक एक कवि और एक उपन्यासकार थे और उनकी माता धरित्री देवी थीं जो एक सामाजिक कार्यकर्ता एवं लेखिका थीं। उनकी स्कूली शिक्षा ढाका में हुई। भारत विभाजन के समय किशोरावस्था में ही उनका परिवार पश्चिम बंगाल में आकर बस गया। बाद में उन्होंने विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन से स्नातक अंग्रेजी में किया और फिर कोलकाता विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर अंग्रेजी में किया।

महाश्वेता जी ने कम उम्र में ही लेखन शुरू कर दिया था और विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं के लिए लघु कथाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान किया। 'झाँसी की रानी' महाश्वेता देवी की प्रथम गद्य रचना है जो 1956 में प्रकाशन में आया। स्वयं उन्हीं के शब्दों में, इसको लिखने के बाद मैं समझ पाई कि मैं एक कथाकार बनूँगी।''

इन्हें 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1986 पद्मश्री, 1997 में ज्ञानपीठ पुरस्कार नेल्सन मंडेला के हाथों प्रदान किया गया था। साहित्य अकादमी से पुरस्कृत उपन्यास 'अरुण्येर अधिकार' आदिवासी नेता बिरसा मुंडा की गाथा है। उपन्यास 'अग्निगर्भ' में नक्सलवादी आदिवासी विद्रोह की पृष्ठभूमि में लिखी गई चार लंबी कहानियाँ हैं।

28 जुलाई 2016 को कोलकाता में उनका देहावसान हो गया।

अतीत के झरोखे से

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर'

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के एक शीर्षस्थ कवि, लेखक एवं निबंधकार हैं। वे आधुनिक युग के श्रेष्ठ आग और राग के कवि के रूप में स्थापित हैं। एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रांति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल, श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है, जिनका सहज प्रमाण हमें उनकी कृतियाँ 'कुरुक्षेत्र' और 'उर्वशी' में मिलते हैं।

रामधारी सिंह दिनकर जी का जन्म 23 सितंबर सन् 1908 ई. को बिहार प्रांत के मुंगेर जिला (वर्तमान में बेगुसराय), सिमरिया गाँव में एक बहुत ही निर्धन परिवार में हुआ था। पिता का नाम रवि सिंह एवं माता का नाम मनरूप देवी था। दिनकर के पिता एक साधारण किसान थे। जब 'दिनकर' काफी छोटे थे तभी उनके पिता का देहांत हो गया था। परिणामतः दिनकर और उनके भाई–बहनों का पालन–पोषण उनकी विधवा माता ने किया। अतः दिनकर का बचपन बहुत ही अभावों एवं संघर्षों में बीता। उनके बचपन का नाम ननुवा था। पिता के चल बसने के बाद परिवार का सारा बोझ उन पर ही आ पड़ा। तमाम तकलीफों के बीच माँ मनरूप देवी ने परिवार को सँभाला।

बचपन से ही मेधावी थे रामधारी सिंह दिनकर । लगन, मेहनत और स्मरण शक्ति में उनकी कोई कमी नहीं थी। कमी थी तो बस पैसे की, परिवार का खर्च ज्यादा था और आमदनी कम। दिनकर के बड़े भाई वसंत सिंह की एक पंक्ति मात्र से 'दिनकर' का पूरा इतिहास ही बदल गया कि ''मैं नहीं पढ़ूँगा हमारा ननुवा पढ़ेगा।' पैसों की कमी से खुद न पढ़कर सिर्फ ननुवा को ही पढ़ाने का एक बहुत बड़ा फैसला बड़े भाई वसंत सिंह ने लिया। इसमें छोटे भाई सत्य नारायण सिंह ने भी अपना स्वर मिलाया और रामधारी सिंह ने भी अपना स्वर मिलाया और इस प्रकार रामधारी सिंह की स्कूल से घर और घर से स्कूल की दौड़ शुरू हो गई। हर रोज घर से 15 किलोमीटर दूर स्कूल जाना दिनकर के लिए बहुत मुश्किल था। बीच में गंगा नदी बहती थी। दिनकर उसे तैर कर पार करते थे। दिनकर की इस विजय यात्रा में वक्त के खिलाफ़ उनकी दौड़ शुरू हो चुकी थी। उनके मस्तिष्क पर ज्ञान का प्रवाह पूरे आवेग में था। पैर में चप्पल नहीं थी लेकिन दिमाग बहुत तेज दौड़ता था। लालटेन में तेल भले ही कम था, लेकिन आँखों में जगमगाते उजले भविष्य के स्वप्न सोने के बाद भी चमकते रहते थे। मैथिली, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी और बांग्ला भाषा की पढ़ाई उन्होंने की। माँ हिन्द का आशीष तो उनके शीश पर सदैव से ही था।

दिनकर जी को 'मानस' पढ़ने की भी आदत थी जो 8 वर्ष की उम्र में ही शुरू हो चुकी थी। 14 वर्ष की उम्र में रामधारी के अंदर सामाजिक चेतना का जागरण भी शुरू होने लगा। इसी उम्र में प्रेम ने आहट दी और उनका विवाह सामवती देवी से हो गया। अध्ययन जारी रहा। हिन्द साहित्य के प्रति उनका आकर्षण लगातार बढ़ता रहा। वास्तव में वे 'इतिहास' विषय के छात्र थे, किन्तु उनकी प्रखर बुद्धि, ज्ञान एवं प्रतिभा ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्रतिष्ठा दिलाई। आज भी 'दिनकर' हिन्दी साहित्य प्रकाश के चमकते हुए 'दिनकर' हैं।

राष्ट्रयज्ञ में स्वतंत्रता से पूर्व अपनी कलम से आहुति देने वाले दिनकर के अंदर राष्ट्रभक्ति की भावना कूट–कूट कर भरी हुई थी। स्वतंत्रता आन्दोलनों में वे सक्रिय रूप से जुड़े रहे। आजादी से पहले दिनकर जनकवि के रूप मे थे, जो आज़ादी के बाद भी वे जन की आवाज बने रहे। वे सच्चे अर्थों में राष्ट्रकवि हैं।

सन् 1952 में दिनकर संसद के सदस्य के रूप में चुने गये और लगातार 12 वर्षों तक बने रहे। सन् 1965 में दिनकर भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बनाये गए। मात्र एक वर्ष कुलपति पद पर रहने के बाद दिनकर भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार के रूप में नियुक्त किये गए और इस पद पर वे 1971 तक बने रहे।

सन् 1972 ई में अपने 'उर्वशी' नामक प्रबंधकाव्य के लिए वे हिन्दी जगत का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजे गए। 'दिनकर' जी की प्रमुख रचनाएँ हैं :–

काव्य – रेणुका, हुंकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, सामधेनी, नील कुसुम, रश्मिरथी, उर्वशी इत्यादि।

गद्य – 'संस्कृति के चार अध्याय'

इस ग्रंथ के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

24 अप्रैल सन् 1974 ई. को दिनकर जी ने अंतिम साँसें लीं और चमचमाता हुआ हिन्दी जगत का सूर्य सदा के लिए अस्त हो गया। उनके नाम से वर्ष 1999 में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।

यात्रा–वृत्तांत

राहुल सांकृत्यायन

- सैर कर दुनिया की गाफिल,
  ये ज़िंदगानी फिरी कहाँ.....।
- जन्म – 9 अप्रैल 1893, कनैला
- मृत्यु – 14 अप्रैल 1963, दार्जीलिंग
- पुरस्कार – पद्म भूषण, साहित्य अकादमी पुरस्कार

महापंडित राहुल सांकृत्यायन को हिंदी यात्रा साहित्य का जनक माना जाता है। हिंदी में राहुल सांकृत्यायन जैसा विद्वान, घुमक्कड़ व 'महापंडित' की उपाधि से स्मरण किया जाने वाला कोई अन्य साहित्यकार न मिलेगा।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन का जन्म 9 अप्रैल 1893 को अपने ननिहाल पंदहा, जिला आजमगढ़, उत्तरप्रदेश में हुआ था। उनके पिता श्री गोवर्धन पांडेय, कनैला उत्तरप्रदेश के निवासी थे। अतः आपका पैतृक गाँव कनैला था। आपके बाल्यकाल का नाम केदारनाथ पांडेय था।

केदारनाथ का बचपन अपने ननिहाल में ही बीता क्योंकि इनकी माता कुलवंती अपने पिता की अकेली संतान थी। आपके नाना रामशरण पाठक फौज में बारह साल नौकरी कर चुके थे। अपनी नौकरी के दौरान कर्नल साहब अर्दली के रूप में जंगलों में दूर–दूर तक शिकार करने जाते थे। उन्होंने साहब के साथ दिल्ली, शिमला, नागपुर, हैदराबाद, अमरावती, नासिक आदि कई शहर देखा। फौजी नाना अपने नाती को शिकार यात्राओं की कहानियाँ सुनाया करते थे। इन्हीं कथा–कहानियों ने केदार नाथ के किशोर मन में दुनिया को देखने की लालसा का बीज अंकुरित किया।

जिस मदरसे में केदार पढ़ते थे वह झगड़ों के समय बंद हो गया। उसी वर्ष 1902 की बरसात से पूर्व ही गाँव में हैजा फैल गया और केदारनाथ को अपने फूफा के साथ बछवल जाना पड़ा जो कि कनैला से 5 किलोमीटर की दूरी पर था। वहाँ उनको सारस्वत व्याकरण पढ़ाना आरंभ किया। फूफा जी के बेटे योगेश के साथ केदार की घनिष्ठता हो गई जो कि आगे चलकर उनके कई यात्रा वृत्तांत में उनके साथी रहे।

बाल्यकाल से ही भ्रमण के लिए निकले राहुल जी जीवन भर कहीं एक स्थान में जमकर न रह सके। स्वदेश ही नहीं विदेशों में जैसे– नेपाल, तिब्बत, लंका, रूस, इंग्लैण्ड, यूरोप, जापान, कोरिया, मंचूरिया, ईरान और चीन में ये कितना घूमे, इसका उल्लेख साहित्य में मिलता है। इन्होंने बौद्ध धर्म के प्रचारक का कार्य भी किया।

ज़रा हट के

हँसी के गोल–गप्पे

1. पप्पू – यार शादी के जोड़े कौन बनाता है ?
   राजू – भगवान बनाता है।
   पप्पू – ओ तेरी की . . .
   मैं तो दर्जी को दे आया . . . . ।

2. लड़की – मैं अपने पापा की परी हूँ।
   लड़का – मैं भी अपने पापा का पारा हूँ।
   लड़की – पारा . . . ? ये क्या है . . .?
   लड़का – मुझे देखते ही उनका पारा चढ़ जाता है . . . .।

3. पागलखाने में आया हुआ एक डॉक्टर मरीजों से घूम–घूम कर मिल रहा था। एक मरीज के पास वह पहुँचा तो वह मरीज बोला, ''डॉक्टर साहब, आप पिछले डॉक्टर से ज़्यादा अच्छे हैं।
   डॉक्टर मरीज की बात सुनकर खुश हुआ। उसने पूछा– ''ऐसा क्यों ?' क्योंकि आप हम लोगों जैसे ही लगते हैं– मरीज उत्साह से बोला।

4. लड़के वाले – हमें लड़की पसंद है।
   लड़की वाले – तो फिर शादी कब करनी है ?
   लड़के वाले – लेकिन हमारा लड़का अभी पढ़ाई कर रहा है।
   लड़की वाले – तो हमारी लड़की क्या किताबें फाड़ देगी ?

5. एक कैदी दूसरे कैदी से – तुम्हें पुलिस ने क्यों पकड़ा ?
   पहला कैदी – बैंक लूटने के बाद वहीं बैठकर पैसे गिनने लगा तो पुलिस ने पकड़ लिया . . . .
   दूसरा कैदी – वहीं पर पैसे गिनने की क्या ज़रुरत थी ?
   पहला कैदी – वहाँ पर लिखा था कि काउंटर छोड़ने से पहले पैसे गिन लें, बाद में बैंक जिम्मेदार नहीं होगा।

6. टीचर : 4 और 4 कितने होते हैं ?
   गप्पू : सर जी 10 . . . .।
   टीचर : 10 कैसे ? . . . . 8 होते हैं . . . .
   गप्पू : हम खानदानी दिलदार हैं, 2 अपनी ओर से जोड़ दिया . . . .।

7. दो लड़कियाँ बस में सीट के लिए लड़ रही थीं।
   कंडक्टर – अरे क्यों लड़ रही हो ? जो उम्र में सबसे बड़ी है, वह बैठ जाए।
   फिर क्या, पूरे रास्ते दोनों खड़ी ही रहीं।
8. मास्टर जी एक होटल में खाली कटोरी में रोटी डुबो–डुबोकर खा रहे थे।
   वेटर ने पूछा – मास्टरजी खाली कटोरी में कैसे खा रहे हैं ?
   मास्टरजी – भइया, हम गणित के अध्यापक हैं दाल हमने 'मान ली' है।
9. ज़िंदगी की भागदौड़ में सेहत का ख्याल रखिए . . . .
   ऐसा ना हो कि आप पीछे रह जाएँ और पेट आगे निकल जाए।
10. इंडियन लोग गिफ्ट्स के लिए थैंक्स नहीं करते, वो कहते हैं . . . .
    ही–ही–ही–ही इसकी क्या ज़रुरत थी।
11. टीचर : वाक्य को अंग्रेजी में ट्रांसलेट करो –
    ''वसंत ने मुझे मुक्का मारा ''
    संजू – वसंतपंचमी।
12. पत्नी : मैं आपसे बात नहीं करूँगी।
    पति – ठीक है !!!
    पत्नी – क्या आप कारण नहीं जानना चाहते ?
    पति – नहीं, मैं तुम्हारे फैसले की इज़्जत करता हूँ !!!

बूझो पहेली

पहेली

1. ग्यारह हज़ार ग्यारह सौ ग्यारह किस प्रकार लिखा जाएगा ?
2. आदि कटे तो गीत सुनाऊँ,
   मध्य कटे तो संत बन जाऊँ,
   अंत कटे साथ बन जाता,
   संपूर्ण सबके मन भाता।
3. एक टेबल पर एक प्लेट में दो सेब रखे हुए हैं
   और उसे खाने वाले तीन आदमी....
   कैसे खाएँगे ?
   तीनों के हिस्से में एक–एक सेब आना ही चाहिए।
4. खिलौनों का भाव
   1 रुपए की 40 मछली
   3 रुपए का 1 बंदर
   5 रुपए का 1 शेर
   100 रुपए में 100 खिलौने कैसे खरीदेंगे ?

नयी पौध . . . .

मेरी माँ

– लाएबा 7/ डी

ममता की मूरत माँ
खुशी की सूरत माँ,
दुख की धूप में
सुख की बरसात माँ ।
जीवन की मिठास माँ
हिम्मत की आवाज़ माँ,
काँटों भरी राह में
फूलों का एहसास माँ।
परिवार को सँभालने वाली माँ
मेरी ज़िंदगी सँवारने वाली माँ,
हर परिस्थिति में ढल जाए माँ
मेरे हर सवालों का हल लाए माँ।
ईश्वर का अवतार है माँ
मेरे जीवन का आधार है माँ।
और मेरे इस जीवन का
सबसे पहला प्यार है माँ।

परछाईं

– सुप्रीत कौर 7/डी

थी मैं एक नन्ही–सी बच्ची,
जिसको नहीं थी कोई खबर संसार की।
जीते चली गई जिस तरह चाहा,
बाद में पता चला कि
यह संसार नहीं है कोई खिलौना।
जब बड़ी हुई तो जाना,
सब जी रहे हैं अपने तरीके से अपनी जिंदगी।
पर यह न जान पाई कि सब रच रहे हैं षड्यंत्र
कहीं किसी का।
जिसको भी कोई मानता अपना मित्र
वह न जान पाता कि वही है, जो फाड़ते हैं, दोस्ती के चित्र
यह सब तो है ज़िंदगी के छोटे भाग,
दुख तो तब होता है, जब अपने ही छोड़ते
हैं अपनों का साथ।
देख यह चक्रव्यूह घबराया मेरा मन,
क्या कोई नहीं है जो हमेशा चले हमारे संग।
जब देखा तो जाना यही है तो वो सच्चा मित्र
जिसका नाम है परछाईं।

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

– निष्ठा सुमन 7/डी

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

हरा भरा ये देश बनाएँ।

वातावरण को स्वच्छ बनाकर,

इस जीवन को स्वस्थ बनाएँ।

पेड़ ना कोई कटने पाए?

जंगल अब ना घटने पाए।

मिलकर ये कसम हम खाएँ

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ ।

पेड़ हैं देते प्राण वायु,

जीवन इनसे हो दीर्घायु

खुद समझें, औरों को बताएँ,

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ।

हर एक का फ़र्ज है बनता,

कम से कम एक पेड़ लगाएँ ।

पल पल बढ़ते प्रदूषण पर,

आओ मिलकर रोक लगाएँ ।

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,

हरा भरा ये देश बनाएँ ।

भ्रष्टाचार

– ईषिता दूबे, 6/डी

जल रहा संसार है,
व्याप्त भ्रष्टाचार है।
धू–धू करता न्याय है,
अट्टाहास करता अन्याय है।
विस्फ़ोट है समाज का,
साथी है अंधकार का।
जलता राष्ट्रवाद है,
शर्मसार विकास है।
सबका साथ हो सबका विकास हो,
आदिशक्ति का प्रकाश हो।
गाँधी–मोदी का साथ हो,
काले धन का विनाश हो।
युवाशक्ति को जागृत करो,
भ्रष्टाचार को शापित करो।
राष्ट्रवाद का शंखनाद करो,
मिल–जुल कर आगाज़ करो।
माया अनमोल हुई,
मानवता शून्य हुई।
भ्रष्टाचार की आँधी में,
भारत माता गांधारी हुई।
लाज द्रौपदी के बचाने को,
कृष्ण को आना होगा।
गीता के निःस्वार्थ कर्म को,
फिर से लाना होगा।
उठो वसुधा का कर्ज–चुकाओ,
शहीदों की राह को अपनाओ।
मातृभूमि पहले, फिर माँ,
भ्रष्टाचार मुक्त हो हिन्दुस्ताँ।

ईश्वर की सोच

– आहना 7/एफ

कोई भगवान कहता,
तो कोई कहता खुदा।
पर उन सब के लिए,
मैं हूँ वही एक शक्ति गुमशुदा।
मैं इतना धनी हूँ, पर फ़िर भी . . .,
यहाँ मंदिर में मुझपर दूध बर्बाद हो रहा है।
और वहाँ वह बच्चा अपनी माँ के गोद में,
भूख के मारे रो रहा है।
यहाँ मस्ज़िद में मुझपर चादरें चढ़ाई जा रही हैं,
और वहाँ ठंड से काँपकर हज़ारों मौतें आ रही हैं।
यहाँ लोग कहते बच्चे
भगवान का रूप होते हैं,
तो वहाँ बाल–मज़दूरी करके,
वे नर्क–सा जीवन जीते हैं।
सुबह–शाम, दिन रात,
बस यही रीति–रिवाज।
और जात–पात,
यही एकमात्र वजह है,
कि आज नहीं है ये दुनिया एक साथ।
आओ तुम्हें एक अनोखी राह दिखाऊँ,
आज अपनी सोच बताऊँ।
यह सारी बातें छोड़ो,
और सिर्फ़ एक बार मेरी राय चुनो।
मेरा प्यार और आशीर्वाद पाने के लिए
पहले अच्छा इन्सान बनो।

बेटी

– प्राची सुमन, 6/सी

है यह घर की चंचल
सबकी आँचल में रच बसकर।
न समझो इसको मज़बूरी,
यह नहीं तुम्हारी कमज़ोरी।
मिठास है इसकी खीर जैसी,
हिम्मत है इसकी वीरांगना जैसी।
कहती अपने आपको यह नानी है।
लेकिन हमारे दिल की रानी है।
है यह अपने परिवार का सम्मान,
है अपने माँ–बाप का अभिमान,
है यह अमूल्य सोना,
जिसे किसी ने ना चाहा खोना
न लेना इससे टक्कर,
कर देगी तुम्हें रफूचक्कर।
यह हमारा आसमान है
और यही हमारी ज़मीन है।
किसी ने कहा कि वह दिल की गरीब है,
लेकिन हम सब के बड़े करीब है।
बेटी है विश्वास, करुणा,
नवीन ऊर्जा भरा ओज
न समझना कभी भी उसको
अपने दिल का बोझ ।

शिक्षक

– प्रतीक कुमार 6/एफ

ज्ञान का सागर बहता रहता,
तैरना किसको आता है।
जो सिखलाएँ तैरना उसमें,
वो शिक्षक कहलाता हैं।

शिक्षा का बीज वो बोते,
शंकाओं को भी हरते।
अंतर मन के अँधियारे में,
ज्ञान का दीप जलाते।

बन के कुम्हार अपने हाथों से
मन को आकार वो देते हैं।
कभी लुहार–सा चोट वो करके,
सपनों को साकार भी करते हैं।

जीवन के कठिन डगर पर जो,
चलना हमें सिखाते हैं।
ऐसे दिव्य स्वरूप को ही
हम सब शिक्षक कहते हैं।

मेरा परिवार

– निष्ठा सुमन 7/डी

घर मेरा एक बरगद है।
मेरे पापा जिसकी जड़ हैं।
घनी छाँव है मेरी माँ
यही है मेरा आसमाँ
पापा का है प्यार अनोखा
जैसा शीतल वृक्ष का झोंका
माँ की ममता सबसे प्यारी
सबसे सुन्दर, सबसे न्यारी।
हाथ पकड़ चलना सिखलाते
पापा हमको खूब घूमाते
माँ मलहम बनकर लग जाती
जब भी हमको चोट सताती।
माँ पापा बिन है, दुनिया सूनी
जैसे तपती आग की धूनी
माँ ममता की धारा है
पिता जीने का सहारा है।

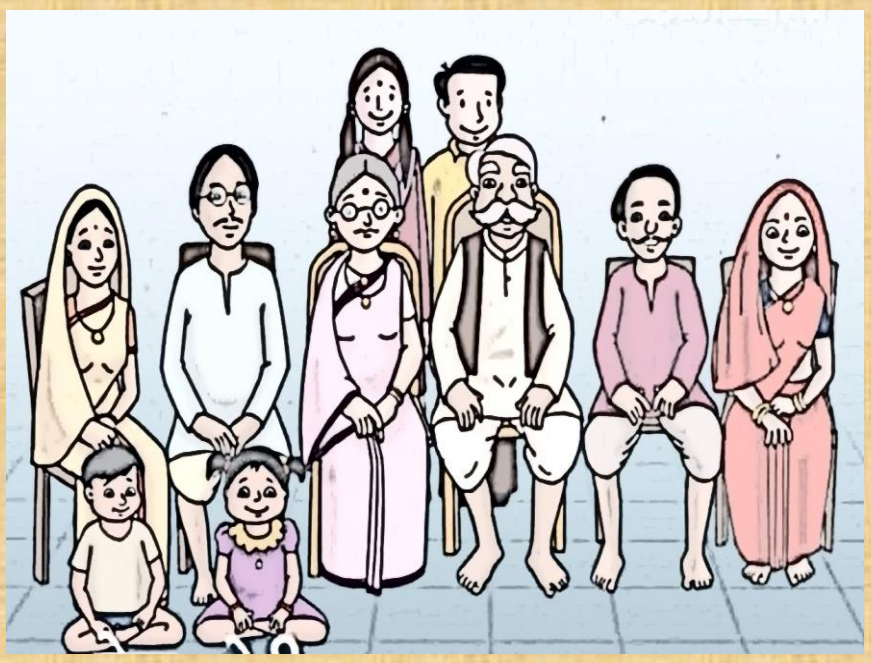

पितामह भीष्म

– चित्तरंजन अरिहंत, 11/बी

पग धारी वह कौन था, जो भ्रष्टाचार पे मौन था।
हमेशा ही उसकी काया थी, हम पे न उसकी छाया थी।
यह कुर्सी तुमको हमने दिया, हमको ही तुमने रौंद दिया।
तुम से न ऐसी आशा थी,
क्या–क्या करोगे ऐसी जिज्ञासा थी।
तुमने है ऐसा काम किया,
लोगों के दिल में खुद ही तुमने,
अपना नाम बदनाम किया।
तुमको न हमने जाना था,
सच्चा ही तुमको माना था।
तुमको तो हमने धर्म–युद्ध का
अर्जुन ही तो माना था।
दस साल की सख्तता देख,
सच्चा होते हुए भी हमने
गीत यही तो गाया है।
अर्जुन समझ रहे थे तुमको,
शकुनि ही केवल पाया है।

औरत का रूप

– सोना 7/बी

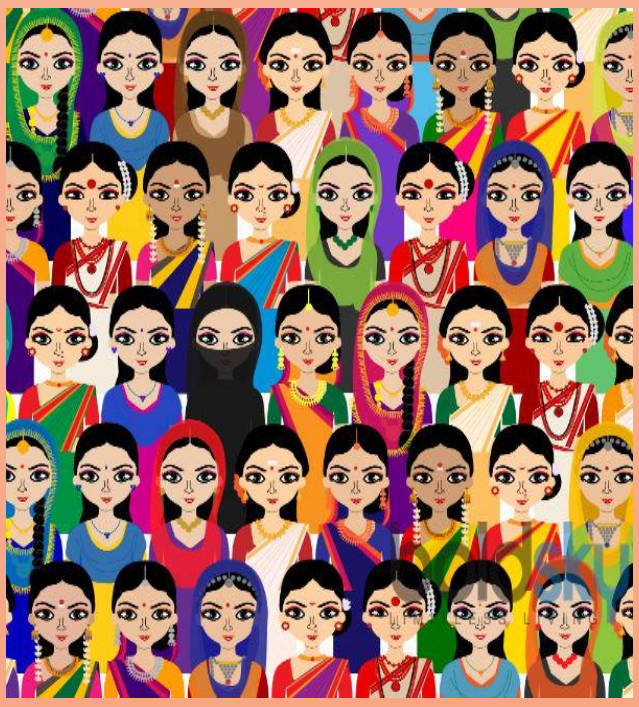

मेरी कविता औरत का रूप बताती।
शांत लहरों–सी वह लहराती।।
जो छेड़े उसके तरंग को।
माँ दुर्गा का स्वरूप दिखाती।।
मेरी कविता औरत का रूप बताती।
धरती का सीना चीरे, उसपर सोने का वृक्ष लगाती।।
मेरे छिन्न मन पर,
ममता है छलकाती।।
मेरी कविता औरत का रूप बताती।
मेरी कविता औरत का रूप बताती।

पापा

– श्रेयश वत्स, 7/एफ

सबसे प्यारे होते हैं पापा,
सबसे न्यारे होते हैं पापा।
प्यार का रंग भर दे दुनिया में,
ऐसे प्यारे होते हैं पापा।
हमें पढ़ना सिखलाते पापा,
हमें जीना सिखलाते पापा,
दुनिया में रहना सिखाते पापा।
ऐसे पापा नहीं होते हैं
जो चिन्ता नहीं करते हैं।
पर बच्चों को चिन्ता नहीं दिखाते पापा
दुखी मन में खुशियाँ भर देते पापा।
मन की इच्छा समझते पापा।
मन का दुख समझते पापा।
दिनभर काम कर थक जाते हैं,
बच्चों को दुखी न देख पाते हैं।
बच्चों को देख थकान मिटाते पापा।
अक्सर मौज़ कराते पापा
सबसे प्यारे होते हैं पापा,
सबसे न्यारे होते हैं पापा।

परीक्षा की तैयारी

– भाव्या सिन्हा 6/ई

छोड़कर बच्चों बातें सारी
कर लो परीक्षा की तैयारी।
आ गया है तुम लोगों पर पढ़ने का पहाड़
इसलिए पढ़ लो सारी किताबें बार–बार।
बंद करो अब ये तुम टी. वी. देखना,
क्योंकि तुम्हें परीक्षा की तैयारी है करना।
खेलकूद अब बंद करो,
माँ–बाप कहते
अंक लाने हैं ज़्यादे,
और हम सब बच्चे
पढ़ाई के धागे में हैं बँधे।

महानता

– ऋषि राज, 8/डी

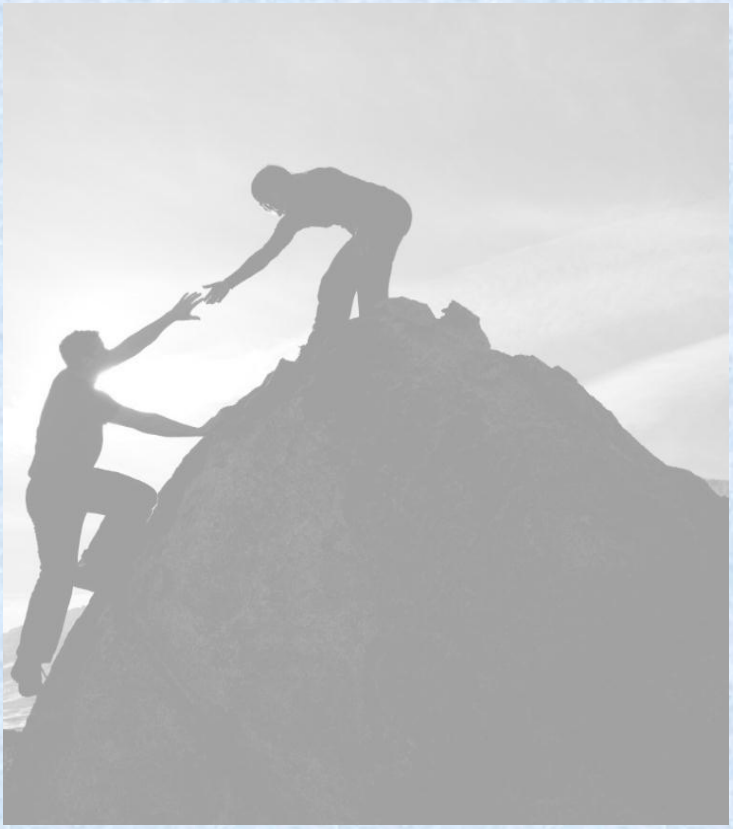

आँधियों के सामने मुस्कुराकर चलते हैं,
वो दूसरों के लिए सब कुछ न्योछावर करते हैं।
उनकी हिम्मत वो नहीं जिसे मुश्किलें डगमगा दें,
महान वे हैं, जो दूसरों की खुशियाँ ला दें।
मंज़िल पाने से पहले रुकते नहीं वे कभी,
मंजिल पाने के बाद भूलते नहीं
वे अपने पैरों के निशाँ कभी।
आखिर तू तो है इनसान वही,
जिसने शुरू किया था यह सफ़र कहीं।
हार गया तो जीतने की नई राह मिल जाएगी,
बिना हारे जीत नहीं आएगी।
महान वो नहीं जो कभी न हारे,
महान वो है जो हारने के बाद भी हिम्मत न हारे।
मौत एक न एक दिन सबकी नींद उड़ाएगी,
मौत एक न एक दिन सबको आ ही जाएगी।
पर महान हैं वही जो मौत से नहीं घबराते हैं,
महान हैं वही जो मौत को भी हँसते–हँसते गले लगाते हैं।

बेईमान राजनीति

– विनायक पांडे 9/बी

गंदी राजनीति का यह भी एक परिणाम है,
बीस रुपये एक बोतल पानी का दाम है।
राजनीति में हिस्सा न लेने का सबसे बड़ा दंड
यह कि अयोग्य व्यक्ति आप पर शासन करता है।
कारनामे हो रहे कितने घिनौने आजकल,
देश की इज़्जत बिकती औने पौने आजकल।
राजनीति में साम, दाम, दंड, भेद सब अपनाया जाता है।
ज़रुरत पड़े तो दुश्मन को दोस्त बनाया जाता है।
राजनीति का रंग भी बड़ा अज़ीब होता है।
वही दुश्मन बनता है जो सबसे करीब होता है।
राजनीति ने नेताओं को क्या–क्या सीखा दिया।
बड़े से बड़े नेताओं को जनता के कदमों में झुका दिया।
कीमत तो खूब बढ़ गई, दिल्ली में धान की,
पर विदा न हो सकी एक बेटी किसान की।
राजनीति की खाट पर बँधा विकास है।
बेरोजगारी खेल रही स्मार्ट फोन पर वाह है।

वर्षा रानी

– ईशान सिन्हा, 6/सी

तुम धन्य हो वर्षा रानी,
मृतप्राणों को देती पानी।
जग में तुम खुशहाली लाती,
खेतों में हरियाली छाती।
संग अनेक सहेली लाती,
तपते जग में शीतलता आती,
नए–नए तुम फूल खिलाती,
जंगल में भी मंगल लाती।
तुम जग की रक्षा करती हो,
तुम बिन कौन हमें दे पानी।
तुम पर ही अरमान हमारा,
तुम पर ही तो प्राण हमारा।
सब मर जाए बिन पानी,
पशु–पक्षी हो या मानव–ज्ञानी।
है सबका जीवन पानी,
तुम धन्य हो वर्षा रानी।

उच्चता काफ़ी नहीं

– रोशन प्रभाकर, 11/एम

पर्वत, शान से खड़ा,
यह पर्वत है, सबसे बड़ा।
अकेला ही है यह पड़ा,
चुनौतियों और संकेतों से भरा।
कहता, उच्चता सिर्फ़ काफ़ी नहीं,
मुझसे बेहतर ये छोटी शिलाएँ सही।
सड़क किनारे क्षणभर बैठकर,
जिसपर कुछ क्षण सोते हैं
और छिपकर पीछे जिसके,
पशु भोजन तो करते हैं।
ऊँचा अवश्य हूँ, परंतु,
लानत है ऐसी ऊँचाई पर।
न पशुओं की पहुँच है,
और न परिंदों के पर।
पुनर्जन्म हो मेरी तो,
देना ऐसी आकृति
रह पाऊँ दिलों के करीब,
हे प्रकृति, हे प्रकृति, हे प्रकृति।

सफ़रनामा

कविता सिन्हा (शिक्षिका)

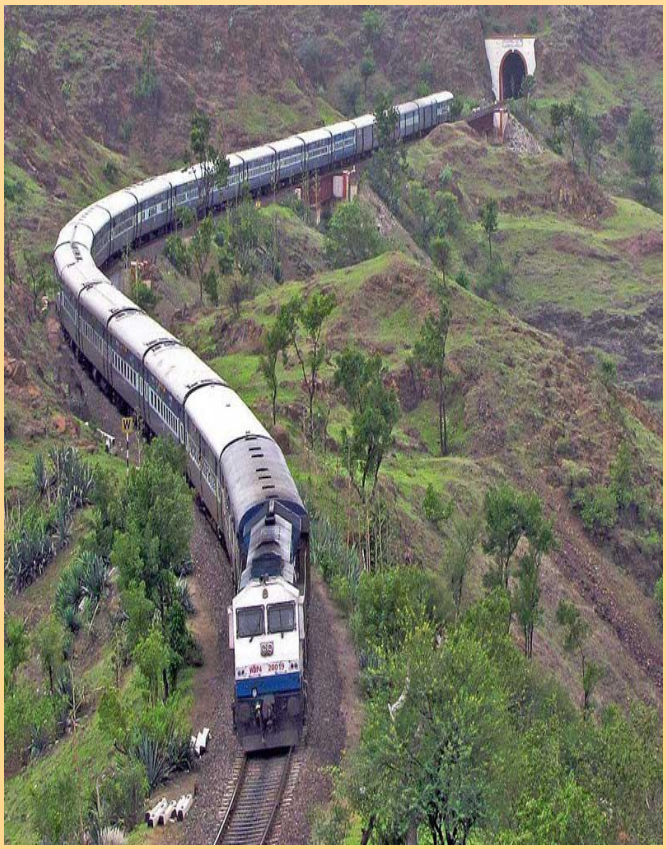

चली जा रही है ये रेलगाड़ी,
अपनी अच्छी रफ़्तार से
तेज़–तेज़ और तेज़
रुकती है कहीं–कहीं
किसी सवार को लेने के लिए
थोड़ी देर थोड़ी चिल. . . पो . . .
फिर सब कुछ रफ़्तरी में
ऐसी है हमारी ज़िन्दगी . . .
चलती रहे रफ़्तार से तो क्या बात . . .
लेकिन अगर ऐसी ये लड़खड़ाई . . . .
तो ज़िन्दगी हताशों से घिर जाती है।
चले चलो मुसाफिर – अपनी रफ्तार से
रुके नहीं, झुके नहीं? अपने आप को सँभाल ले
चले चलो बिना रुके . . .बिना झुके
बगल की पगडंडी ज़्यादातर साथ नहीं देती
मंज़िल तक,
एक राह बंद – तो दूसरे को खोल और बढ़े चलो. . . .।।

धरती माँ

– तिलोत्तमा कोचगवे (शिक्षिका)

चलना होगा,
धरती की चाल से आगे,
निकलना होगा जड़ों से फूटकर
अंकुराते हुए भू पर।
फिर है अनंत आकाश,
चाहे जितना बढ़ें
लेकिन बढ़ने की सीमा,
तय करती हैं जड़ें।
धरती भी शामिल होती है,
जड़ की योजनाओं में।
क्योंकि वृक्ष को पकड़कर,
तो वही रखती हैं,
एक सीमा तक ही,
बढ़ाती है वृक्ष को।
लेकिन होती नहीं हैं,
वे स्वार्थी
फलों का स्वाद भी
तो वही चखाती हैं।

दिल का रिश्ता

ज्योति दूबे (शिक्षिका)

जीवन में कभी–कभी कोई ऐसा मिल जाता है,
अनजाना एक दिल से रिश्ता जुड़ जाता है।
उनको पता ही नहीं हम उनको मानते हैं।
वो तो ऐसे हैं जो मिट्टी छुकर सोना कर जाते हैं।
दुनिया से लड़ जाती हूँ ,
पर उनके आगे नतमस्तक हो जाती हूँ।
क्या ऐसा भी होता है ?
कि इंसान बिना डरे भी किसी के आगे मूक होता है।
वे कैसे मेरी मदद करते हैं उनको खबर ही नहीं,
हम उनकी खुशी से अपनी दुआ का असर जान लेते हैं।
आपको देख बहुतों को मिलती होगी प्रेरणा,
रखते होंगे लोग श्रद्धा, हम तो आपकी भक्ति में खुश हैं,
यही मेरी शक्ति का स्रोत है।
कभी आप माता–पिता और भाई–बहन बन जाते हो,
गुरु की क्या बात कहूँ,
आप तो जीवन की हर कला भी सीखा जाते हो।
पिछले जन्मों का तो पता नहीं,
पर इस जन्म में आपका दिया बहुत कुछ है,
इसे भुलाना बड़ी ही मुश्किल है।
जहाँ आप जाते हो एक शमा बना देते हो,
आपकी प्रशंसा से दिल खुश हो जाता है।
ये कैसी है भक्ति ये कैसी है शक्ति ?
बेखबर प्रीति भी क्या होती है ऐसी ?
क्या होती है ऐसी ?

चित्र में रंग भरो

यह चित्र सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए है। प्रतिभागी इसमें रंग भरकर पत्रिका के ईमेल पर 10 अक्टूबर, 2019 तक भेज सकते हैं, प्रथम तीन चयनित चित्रों को पुरस्कृत किया जाएगा एवं इसका परिणाम अगले अंक में दिया जाएगा।

नई सुबह
हम बच्चों की . . .

अगले अंक में .....
हमारी संस्कृति, हमारी धरोहर